www.bharatsamvad.live

R.N.I.No- MAHHIN/2017/74173

सत्य का स्वर

भारत संवाद

मुंबई, प्रयागराज और लखनऊ से प्रकाशित

सोशल मीडिया पर भारत संवाद

https://x.com/BharatSamvad

www.facebook.com/bharatsamvad.in

www.youtube.com/@BharatSamvad-m3n

E-Paper bharatsamvad.live

मौसम

अधिकतम तापमान 37.c

27.c न्यूनतम तापमान

बाजार

सोना 89.075g

चांदी 91.500 kg

2 मुफ्त रेवड़ी की राजनीति पर रोक के संकेत, शीर्ष अदालत पर टिकी नजर

सिंचाई संसाधनों के बावजूद किसानों की समस्या बरकरार 04

वर्ष :08 | अंक :246 | मुंबई ,गुरूवार , 27 फरवरी , 2025 | पृष्ठ : 06 | मूल्य : 2 : 00 रुपए

संक्षिप्त समाचार

देहरादून जिले के कालसी में दो भालुओं के पित्ताशय के साथ दो वन्यजीव तस्कर गिरफ्तार

उत्तराखंड पुलिस के विशेष कार्यबल (एसटीएफ) ने दो भालुओं के पित्ताशय (आहारनाल से जुड़ा एक अंग) एवं तीन कारतूसों के साथ दो संदिग्ध वन्य तस्करों को गिरफ्तार किया है। उत्तराखंड एसटीएफ के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक नवनीत सिंह भुल्लर ने बुधवार को यहां बताया कि वन्यजीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो (डब्ल्यूसीसीबी) दिल्ली से वन्यजीवों के अंगों की अवैध तस्करी की सूचना मिली थी जिसके आधार पर देहरादून जिले के कालसी क्षेत्र के जोहड़ी में कालसी-चकराता मार्ग से मंगलवार को इन संदिग्ध तस्करों को गिरफ्तार किया गया। उन्होंने बताया कि संदिग्ध तस्करों के कब्जे से दो भालुओं के 19 ग्राम और आठ ग्राम के पित्ताशय तथा 12 बोर के तीन कारतूस बरामद किए गए। उनके अनुसार संदिग्ध वन्यजीव तस्करों की पहचान चकराता के बनियाना गांव के रहने वाले कलम सिंह चौहान (32) और संतु (44) के रूप में हुई है। भुल्लर ने बताया कि भालू को वन्यजीव जन्तु संरक्षण अधिनियम की पहली अनुसूची में रखा गया है और इसका शिकार करना एक गंभीर अपराध है।

राजौरी में सेना के वाहन पर आतंकी हमला, सर्च ऑपरेशन जारी

राजौरी सेक्टर में एक आतंकवादी हमले की सूचना मिली जब अज्ञात बंदूकधारियों ने सुंदरबनी पुलिस स्टेशन सीमा के तहत फाल, मल्लाह के पास एक भारतीय सेना के वाहन पर गोलीबारी की। हमला दोपहर करीब 12:45 बजे हुआ, जिसमें आतंकवादियों ने घटनास्थल से भागने से पहले सेना के काफिले पर 2-3 राउंड फायरिंग की। गोलीबारी के बाद सेना के जवानों ने तेजी से इलाके की घेराबंदी की और हमलावरों को पकड़ने के लिए तलाशी अभियान शुरू किया। घटना स्थल सुंदरबनी में सीआरपीएफ बटालियन मुख्यालय से लगभग 5-6 किमी दूर है। सुरक्षा बल क्षेत्र की छानबीन कर रहे हैं और स्थिति सामने आने पर विस्तृत जानकारी की प्रतीक्षा की जा रही है। वहीं, जम्मू-कश्मीर पुलिस ने पाकिस्तान स्थित दो आतंकवादी आकाओं की लाखों रुपये की संपत्ति मंगलवार को कुपवाड़ा जिले में कुर्क की। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। पुलिस द्वारा अदालत से आदेश प्राप्त करने के बाद कुर्क की गई संपत्तियों में तीन कनाल और 12 मरला भूमि शामिल है। अधिकारियों ने बताया कि ये संपत्तियां ताहिर अहमद पीर और मोहम्मद रमजान गनी की हैं, जो कुपवाड़ा के निवासी हैं और फिलहाल पाकिस्तान से बाहर रहते हैं।

महाशिवरात्रि पर महास्नान के साथ ही महाकुंभ का समापन

दुनिया के सबसे बड़े आयोजन का आखिरी दिन:6 बजे तक 1.44 करोड़ ने डुबकी लगाई

महाशिवरात्रि

▸▸महाकुम्भ के पलट प्रवाह से काशी में इस साल महाशिवरात्रि पर सर्वाधिक हुई भक्तों की संख्या.काशी में आज 25 लाख श्रद्धालुओं के पहुंचने की उम्मीद, व्यवस्थाओं को चुस्त-दुरुस्त बनाने में जुटी योगी सरकार हर हर महादेव के जयघोष से गूंज रही काशी, सुरक्षा के तगड़े बंदोबस्त.

एजेंसी

प्रयागराज , महाकुंभ का आज आखिरी दिन है। पिछले 44 दिन में 65 करोड़ श्रद्धालु डुबकी लगा चुके हैं। ये आंकड़ा अमेरिका की आबादी (करीब 34 करोड़) से दोगुना है। महाशिवरात्रि पर्व स्नान के साथ ही 45 दिनों तक चले महाकुंभ का समापन हो जाएगा। एक्ट्रेस प्रीति जिंटा ने भी महाकुंभ जाने का वीडियो शेयर किया। लिखा- जो अनुभव हुआ, उसे बता नहीं सकती। आज शाम 6 बजे तक 1.44 करोड़ लोग स्नान कर चुके हैं। महाशिवरात्रि पर 3 करोड़ श्रद्धालुओं के पहुंचने का अनुमान है। यानी, कुल आंकड़ा 66 से 67 करोड़ तक पहुंच जाएगा। वहीं, महाकुंभ में ड्यूटी कर रहे एक सफाई कर्मचारी ने अपना गला काट लिया। ड्यूटी के दौरान ही वह शौचालय में गया और चाकू अपने गले में मार लिया। उसे अस्पताल ले जाया गया है, जहां उसकी हालत गंभीर है। संगम में डुबकी लगाने वालों की यह संख्या 193 देशों की जनसंख्या से ज्यादा है। सिर्फ भारत और चीन की आबादी महाकुंभ आए श्रद्धालुओं से ज्यादा है। योगी सरकार ने दावा किया कि दुनिया में हिंदुओं की आधी आबादी के बराबर लोग यहां आए हैं। महाकुंभ में आखिरी स्नान को देखते हुए प्रयागराज शहर में 25 फरवरी की शाम से वाहनों की नो-एंट्री कर दी गई है। मेले के अंदर भी वाहन नहीं चल रहे हैं। रात से ही संगम जाने वाले रास्तों पर भारी भीड़ है। संगम घाट पर स्नान के बाद श्रद्धालुओं से घाट खाली कराए जा रहे हैं।

महाशिवरात्रि पर काशी में भव्य नजारा, मंगला आरती के बाद निकली अखाड़ों की शोभायात्रा

- मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ सुबह से ही काशी और प्रयाग के आयोजनों पर रखे हुए हैं सीधी नजर
- काशी विश्वनाथ धाम क्षेत्र में नागा संन्यासियों, साधु-संतों और श्रद्धालुओं पर अधिकारियों ने बरसाए पुष्प
- लगातार 46 घंटों तक बाबा विश्वनाथ देंगे भक्तों को दर्शन, शाम को निकलेगी अलौकिक शिवबारात
- सीएम योगी के निर्देश पर उच्चाधिकारी लगातार क्षेत्र का दौरा कर ले रहे हालात का जायजा

वाराणसी। महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर काशी में बाबा विश्वनाथ के दर्शन के लिए श्रद्धालुओं का अपार जनसैलाब उमड़ पड़ा है। इस बार करीब 25 लाख भक्तों के पहुंचने की संभावना जताई जा रही है, जो पिछले सभी रिकॉर्ड्स को पार कर रहा है। आधी रात से ही मंदिर के बाहर 3 किलोमीटर लंबी कतारें लगी हैं और बाबा विश्वनाथ लगातार 46 घंटे तक भक्तों को दर्शन देंगे। इस ऐतिहासिक आयोजन को सुव्यवस्थित बनाने में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ लगातार व्यवस्थाओं पर नजर बनाए हुए हैं। मुख्यमंत्री के निर्देश पर उच्चाधिकारी लगातार क्षेत्र का दौरा कर हालात का जायजा लेते दिखे। महाकुम्भ के पलट प्रवाह से उमड़ी श्रद्धालुओं की ऐतिहासिक भीड़ महाशिवरात्रि का यह उत्सव काशी में उस समय और भी खास हो गया, जब महाकुम्भ का पलट प्रवाह यहां देखने को मिला।

महाकुम्भ के समापन पर वायुसेना की महासलामी, संगम के ऊपर गरजे सुखोई

महाकुम्भ नगर। महाकुम्भ पर महाशिवरात्रि के अंतिम स्नान पर्व के दौरान भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमानों ने पूरे आयोजन को महासलामी दी है। बुधवार दोपहर वायुसेना के विमानों की तेज गर्जना सुन श्रद्धालुओं ने आसमान की ओर देख गर्व और उत्साह से तालियां बजानी शुरू कर दी। इस दौरान लोग जय श्री राम, हर हर गंगे, हर हर महादेव के साथ मोदी-योगी के भी जयकारे लगाने लगे। इसी के साथ वायुसेना के एयर शो के फोटो और वीडियो बनाकर श्रद्धालु सोशल मीडिया पर शेयर करने लगे। वायुसेना के एक अधिकारी के अनुसार महाकुम्भ में आए श्रद्धालुओं का अंतिम स्नान पर्व पर संगम क्षेत्र के ऊपर भव्य एयर शो से अभिवादन किया गया। इस पावन अवसर पर जहां गंगा तट पर डेढ़ करोड़ से ज्यादा श्रद्धालु डुबकी लगा रहे थे, वहीं आकाश में सुखोई, एएन 32 और चेतक हेलीकॉप्टर आसमान से श्रद्धालुओं का उत्साह बढ़ा रहे थे।

विदेशी श्रद्धालुओं ने साझा किए अनुभव

महाकुम्भ को बताया अद्भुत और अविस्मरणीय अनुभव

महाकुम्भ नगर। महाकुम्भ 2025 अपने अंतिम चरण में पहुंच चुका है और महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर त्रिवेणी संगम में देश-विदेश से आए श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। लंदन, ब्राजील, मैक्सिको और अमेरिका समेत दुनिया के कई अन्य देशों से आए श्रद्धालुओं ने गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम में पवित्र स्नान किया और भारतीय संस्कृति की गहराई को करीब से महसूस किया। इन विदेशी श्रद्धालुओं ने अपने अनुभव साझा करते हुए इसे जीवन का अविस्मरणीय पल बताया। उल्लेखनीय है कि 13 जनवरी से 26 फरवरी के मध्य आयोजित किए गए महाकुम्भ 2025 ने विश्व भर से करोड़ों श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित किया।

महाशिवरात्रि पर रुद्राभिषेक कर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने की लोकमंगल की प्रार्थना

गोरक्षपीठ के शक्ति मंदिर में हुआ रुद्राभिषेक, हवन के साथ पूर्ण हुआ गोरक्षपीठ में शिवोपासना का अनुष्ठान

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाशिवरात्रि के पावन स्नान पर्व पर त्रिवेणी संगम में आस्था की डुबकी लगा रहे श्रद्धालुओं का अभिनंदन करते हुए उन्हें पर्व की शुभकामनाएं दीं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर उन्होंने समस्त श्रद्धालुओं, पूज्य साधु संतों को शुभकामनाएं देते हुए भगवान शिव और पुण्य सलिला मां गंगा से सभी के कल्याण की प्रार्थना की। इससे पूर्व मुख्यमंत्री ने महाकुम्भ से इतर समस्त देशवासियों को भी महाशिवरात्रि की बधाई और शुभकामनाएं दीं।

एजेंसी

गोरखपुर । गोरक्षपीठाधीश्वर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर बुधवार को रुद्राभिषेक कर देवाधिदेव महादेव से लोक मंगल और राष्ट्र कल्याण की प्रार्थना की। रुद्राभिषेक गोरक्षपीठ के पीठाधीश्वर आवास में स्थित शक्ति मंदिर में हुआ। रुद्राभिषेक के उपरांत मुख्यमंत्री ने हवन कर गोरक्षपीठ में शिवोपासना का अनुष्ठान पूर्ण किया।

महाशिवरात्रि पर विशेष उपासना के क्रम में बुधवार सुबह मुख्यमंत्री ने शक्ति मंदिर में भगवान भोले शंकर का गोदुग्ध से रुद्राभिषेक किया। मठ के पुरोहित एवं वेदपाठी ब्राह्मणों ने शुक्ल यजुर्वेद संहिता के रुद्राष्टाध्यायी के महामंत्रों द्वारा रुद्राभिषेक का अनुष्ठान पूर्ण कराया। रुद्राभिषेक के बाद सीएम योगी ने हवन तथा आरती कर चराचर जगत के कल्याण के लिए आदियोगी महादेव से प्रार्थना की। अनुष्ठान का यह कार्य दो घंटे से अधिक समय तक चला। इसके पूर्व मुख्यमंत्री एवं गोरक्षपीठाधीश्वर योगी आदित्यनाथ ने गोरखनाथ मंदिर परिसर स्थित शिव मंदिर में भी पूजन किया। उन्होंने यहां भगवान नंदी का पूजन कर भगवान भोलेनाथ का जलाभिषेक किया।

स्वयं को शिक्षित और आत्मनिर्भर बनाने के निरंतर प्रयास करें महिलाएं : मुर्मु

संतों ने समाज में महिलाओं के लिए सम्मानजनक स्थान सुनिश्चित किया है : राष्ट्रपति मुर्मु

“मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले के गढ़ा गांव के बागेश्वर धाम में आयोजित एक सामूहिक विवाह समारोह को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने कहा कि भारत में संतों ने समाज में महिलाओं के लिए सम्मानजनक स्थान सुनिश्चित किया है और देश आज ह्यमहिला विकास से महिला-नीत विकास की ओर बढ़ रहा है।

▸▸संत समुदाय ने समाज से सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आवाज उठाकर उन्हें दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और समाज में महिलाओं के लिए सम्मानजनक स्थान सुनिश्चित किया है। मुर्मू ने कहा, आज, जब हमारा देश महिला विकास से महिला-नीत वाले विकास की ओर बढ़ रहा है

एजेंसी

गढ़ा (छतरपुर): राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने देश की महिलाओं का आह्वान करते हुए आज कहा कि महिलाएं स्वयं को शिक्षित और आत्मनिर्भर बनाने के निरंतर प्रयास करती रहें क्योंकि महिलाओं के सफल होने से समाज सफल होता है। श्रीमती मुर्मु मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले के गढ़ा ग्राम स्थित बागेश्वर धाम में आयोजित सामूहिक विवाह समारोह को संबोधित कर रहीं थीं। इस दौरान राज्यपाल मंगुभाई पटेल, मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव, खजुराहो सासंद और भारतीय जनता पार्टी अध्यक्ष विष्णुदत्त शर्मा एवं बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर पंडित धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री भी उपस्थित थे। श्रीमती मुर्मु ने कहा कि वे 251 बेटियों के सामूहिक विवाह समारोह में शामिल होकर अत्यंत प्रसन्न हैं। उन्होंने कहा कि हमारा समाज प्रगति के पथ पर आगे बढ़े, उनकी यही कामना है। इसके साथ ही उन्होंने नवयुगलों को सुखमय वैवाहिक जीवन के लिए शुभकामनाएं भी दीं। राष्ट्रपति ने कहा कि ये समारोह जन सहयोग से हो रहा है और इसमें नवयुगलों को आवश्यक सामान दिया जा रहा है। ये जनकल्याण का कार्य है।

हजारीबाग में शिवरात्रि पर झंडा लगाने को लेकर बवाल

दो गुटों में जमकर पथराव और आगजनी

▸▸अफरा-तफरी में तीन मोटरसाइकिलों और एक बलेनो कार को आग लगा दी गई, जबकि एक अन्य मोटरसाइकिल और एक ऑटोरिक्शा में तोड़फोड़ की गई। साथ ही उपद्रवियों ने एक दुकान में भी आग लगा दी। कई लोगों को चोटें आईं और उन्हें इलाज के लिए हजारीबाग सदर अस्पताल ले जाया गया।

एजेंसी

हजारीबाग के इचाक प्रखंड के डुमरौन गांव में बुधवार की सुबह महाशिवरात्रि समारोह के लिए झंडे और लाउडस्पीकर लगाने को लेकर दो समूहों के बीच हिंसक झड़प हो गई। विवाद जल्द ही पथराव में बदल गया, जिसके परिणामस्वरूप कई लोग घायल हो गए। अफरा-तफरी में तीन मोटरसाइकिलों और एक बलेनो कार को आग लगा दी गई, जबकि एक अन्य मोटरसाइकिल और एक ऑटोरिक्शा में तोड़फोड़ की गई। साथ ही उपद्रवियों ने एक दुकान में भी आग लगा दी। कई लोगों को चोटें आईं और उन्हें इलाज के लिए हजारीबाग सदर अस्पताल ले जाया गया।

बिहार में नीतीश कैबिनेट का हुआ विस्तार

बीजेपी के 7 विधायकों ने ली मंत्री पद की शपथ ,सभी भाजपा विधायक

भाजपा ने परंपरागत रूप से प्रतिद्वंद्वी पार्टियों के प्रभुत्व वाले क्षेत्रों में पकड़ हासिल करने के लिए राजपूत, भूमिहार, कुर्मी और ओबीसी समुदायों सहित विभिन्न जातियों का प्रतिनिधित्व करने पर रणनीतिक रूप से ध्यान केंद्रित किया है।

एजेंसी

बिहार। बिहार कैबिनेट विस्तार के तहत बुधवार को राजभवन में सात मंत्रियों ने शपथ ली। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की मौजूदगी में संजय सरावगी, सुनील कुमार, जिबेश मिश्रा और विजय कुमार मंडल समेत सात नये विधायकों ने कैबिनेट मंत्री पद की शपथ ली। कैबिनेट विस्तार में जातिगत समीकरणों का विशेष ध्यान रखा गया है। नीतीश कुमार के मंत्रिमंडल में शामिल होने वाले सात विधायक हैं संजय सरावगी (दरभंगा), सुनील कुमार (बिहारशरीफ), जिबेश कुमार (जाले), राहु कुमार सिंह (साहेबगंज), मोती लाल प्रसाद (रीगा), विजय कुमार मंडल (सिकटी) और कृष्ण कुमार मंटू (अमनौर)। भाजपा ने परंपरागत रूप से प्रतिद्वंद्वी पार्टियों के प्रभुत्व वाले क्षेत्रों में पकड़ हासिल करने के लिए राजपूत, भूमिहार, कुर्मी और ओबीसी समुदायों सहित विभिन्न जातियों का प्रतिनिधित्व करने पर रणनीतिक रूप से ध्यान केंद्रित किया है।

विशेष रूप से, पार्टी ने मिथिलांचल क्षेत्र में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं, जो आगामी चुनावों के लिए एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। बीजेपी ने मिथिलांचल से दो सदस्यों को कैबिनेट में शामिल किया है।

महाकुंभ सुंदरी ने दी आत्महत्या की धमकी, हर्षा रिछारिया बोली-एक-एक का नाम लिखकर जाऊंगी

आरोप

महाकुंभ से चर्चा में आई सोशल मीडिया इंफ्लूएंसर हर्षा ने वीडियो जारी कर खुदकुशी करने की बात कही है .जिसमें उन्होंने कुछ लोगों पर आरोप लगाया.

एजेंसी

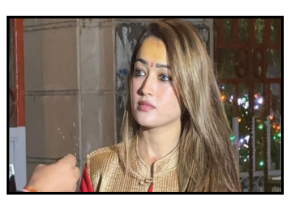

भोपाल: प्रयागराज महाकुंभ से चर्चा में आई भोपाल की हर्षा रिछारिया एआई से एडिटेड वीडियो जारी किए जाने से परेशान हो गई है. उन्होंने अब इस तरह के वीडियो से परेशान होकर आत्महत्या की धमकी दी है. हर्षा रिछारिया ने सोशल नेटवर्किंग साइट पर वीडियो जारी कर रोते हुए वीडियो जारी किया है. 2 मिनट 13 सेकेंड के इस वीडियो में उन्होंने कहा एआई से फेक वीडियो एडिट कराए जा रहे हैं. जिस दिन हिम्मत टूट गई, उस दिन सबका नाम लिखकर जान दे दूंगी. हर्षा रिछारिया ने अपने वीडियो में कहा कि मैंने महाकुंभ से प्रतिज्ञा की थी कि अब मैं हिंदुत्व के लिए काम करूंगी. धर्म संस्कृति को आगे बढ़ाने का काम करूंगी, लेकिन कुछ धर्म विरोधी लोग मुझे आगे बढ़ने से रोक रहे हैं।

तंज केजरीवाल पर स्वाति मालीवाल का तंज

'कुर्सी के लिए कभी दिल्ली का बेटा, कभी हरियाणा का लाल, अब पंजाब दा पुत्तर'

एजेंसी

“उनकी एक्स पोस्ट को उन अटकलों की प्रतिक्रिया के रूप में देखा जा रहा है कि केजरीवाल पंजाब से राज्यसभा में प्रवेश कर सकते हैं। इस अफवाह को तब हवा मिली जब आप ने लुधियाना पश्चिम विधानसभा उपचुनाव में राज्यसभा सदस्य संजीव अरोड़ा को मैदान में उतारा

नयी दिल्ली। राज्यसभा सांसद स्वाति मालीवाल ने मंगलवार को आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल पर परोक्ष रूप से कटाक्ष करते हुए कहा कि सत्ता के लिए वह एक बार खुद को दिल्ली का बेटा, एक बार हरियाणा का लाल और अब पंजाब दा पुत्तर कहते हैं। पार्टी प्रमुख के आवास पर केजरीवाल के पीए विभव कुमार द्वारा हमला किए जाने के बाद आप से दूरी बनाने वाली स्वाति ने हिंदी में एक पोस्ट में लिखा, ₹कुर्सी के लिए कभी दिल्ली का बेटा, कभी हरियाणा का लाल, अब पंजाब दा पुत्तर।₹ उनकी एक्स पोस्ट को उन अटकलों की प्रतिक्रिया के रूप में देखा जा रहा है कि केजरीवाल पंजाब से राज्यसभा में प्रवेश कर सकते हैं। इस अफवाह को तब हवा मिली जब आप ने लुधियाना पश्चिम विधानसभा उपचुनाव में राज्यसभा सदस्य संजीव अरोड़ा को मैदान में उतारा। हालांकि, आप सूत्रों ने इन अटकलों को खारिज करते हुए कहा कि केजरीवाल उच्च सदन में नहीं जा रहे हैं। इससे पहले दिन में, अअढ ने राज्यसभा सांसद संजीव अरोड़ा को लुधियाना पश्चिम विधानसभा उपचुनाव के लिए अपना उम्मीदवार नामित किया। यह घोषणा आप के राष्ट्रीय महासचिव संदीप पाठक ने एक्स पर एक पोस्ट में की। उपचुनाव की तारीख अभी घोषित नहीं की गई है। लुधियाना के उद्योगपति अरोड़ा 2022 से राज्यसभा के सदस्य हैं। लुधियाना पश्चिम सीट पिछले महीने आप विधायक गुरप्रीत बस्सी गोगी की मृत्यु के बाद खाली हो गई थी। गोगी की उनके लाइसेंसी हथियार से दुर्घटनावश छूटने के बाद गोली लगने से उनके घर पर मृत्यु हो गई। घोषणा पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए अरोड़ा ने कहा कि वह उन्हें मैदान में उतारने के लिए पार्टी नेतृत्व के आभारी हैं। इससे पहले दिन में आप ने लुधियाना पश्चिम विधानसभा उपचुनाव के लिए राज्यसभा सांसद संजीव अरोड़ा को अपना उम्मीदवार बनाया। आप के राष्ट्रीय महासचिव संदीप पाठक ने एक्स पर एक पोस्ट में इसकी घोषणा की। उपचुनाव की तारीख की घोषणा अभी नहीं की गई है। लुधियाना के उद्योगपति अरोड़ा 2022 से राज्यसभा के सदस्य हैं। पिछले महीने आप विधायक गुरप्रीत बस्सी गोगी की मौत के बाद लुधियाना पश्चिम सीट खाली हो गई थी। गोगी की उनके घर पर लाइसेंसी हथियार से गलती से गोली चलने से मौत हो गई थी। घोषणा पर प्रतिक्रिया देते हुए अरोड़ा ने कहा कि उन्हें मैदान में उतारने के लिए वह पार्टी नेतृत्व के आभारी हैं।

भारत के ऊर्जा क्षेत्र में असम प्रमुख खिलाड़ी: मुख्यमंत्री

○ इस सत्र में तेल व गैस क्षेत्र में असम की रणनीतिक पहल पर चर्चा की गई, जिसमें वैश्विक ऊर्जा बदलावों के अनुरूप ऊर्जा अवसंरचना विकास, नवाचार तथा निवेश अवसरों पर विशेष ध्यान दिया गया।

एजेंसी

असम। असम के मुख्यमंत्री हिमंत विश्व शर्मा ने बुधवार को कहा कि राज्य भारत के ऊर्जा क्षेत्र में एक प्रमुख खिलाड़ी बना हुआ है, जहां विशाल हाइड्रोकार्बन भंडार और कुशल कार्यबल है। मुख्यमंत्री ने यहां एडवांटेज असम 2.0 निवेश एवं अवसंरचना शिखर सम्मेलन के समापन के दिन कहा कि असम ने चार चालू रिफाइनरियों और 74.5 लाख टन की संयुक्त शोधन क्षमता के साथ भारत के तेल उद्योग में अग्रणी भूमिका निभाई है, जिससे देश को ईंधन की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित हुई है। असम की ऊर्जा क्षमता का पूर्ण इस्तेमाल: भविष्य के लिए तैयार तेल व गैस अवसंरचना का निर्माण, नवाचार व वैश्विक ऊर्जा परिवर्तनों में निवेश विषय पर आयोजित सत्र में उन्होंने कहा कि तेल उद्योग ने 19वीं सदी के अंत में गति पकड़ी थी। देश के प्राकृतिक गैस भंडार का 12 प्रतिशत हिस्सा राज्य में है और यह भारत की आधी प्राकृतिक गैस का उत्पादन करता है। इस सत्र में तेल व गैस क्षेत्र में असम की रणनीतिक पहल पर चर्चा की गई।

सम्पादकीय

खेती की सेहत सुधारने की कोशिश, किसानों के लिए उर्वरक की पहचान जरूरी

विश्व की ढाई प्रतिशत जमीन पर दुनिया की 17.8 प्रतिशत जनसंख्या का पेट भरना निश्चित रूप से चुनौतीपूर्ण कार्य है। अब तक देश के किसान इस चुनौती पर खरे उतरे हैं, लेकिन मिट्टी की उर्वरता में ह्रास की दर को देखें तो भविष्य की राह आसान नहीं है। बेजान होती मिट्टी का ही नतीजा है कि बुजुर्ग यह शिकायत करते रहते हैं कि आखिर अनाज इतने बेस्वाद कैसे होते जा रहे हैं? पहले किसान एक साथ कई फसलें बोते थे और एक ही फसल की सैकड़ों किस्में मौजूद थी। दरअसल हरित क्रांति के दौर में क्षेत्र विशेष की पारिस्थितिकी दशाओं की उपेक्षा कर फसलें ऊपर से थोपी गईं। जैसे दक्षिण भारत में गेहूं और पंजाब में धान की खेती। किसान उन्हीं फसलों की खेती करने लगे, जिनका बाजार में अच्छा मूल्य मिलता हो। इससे दलहनी, तिलहनी फसलें अनुर्वर और सीमांत भूमियों पर धकेल दी गईं। इस प्रकार फसल चक्र थमा, जिससे मिट्टी की उर्वरता, नमी, भुरभुरेपन में कमी आनी शुरू हुई। इसकी भरपाई के लिए रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग बढ़ा और हरी खाद, कंपोस्ट आदि भुला दिए गए। रासायनिक खादों और कीटनाशकों के प्रयोग से शुरू में तो उत्पादकता बढ़ी, लेकिन आगे चलकर उसमें गिरावट आने लगी। उदाहरण के लिए 1960 में एक किलो रासायनिक खाद डालने पर उपज में 25 किलो की बढ़ोतरी होती थी, जो कि 1975 में 15 किलो और 2014 में चार किलो ही रह गई। मिट्टी के महत्व का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि जिस मिट्टी की दो सेंटीमीटर मोटी परत बनने में 500 साल लग जाते हैं, वह महज कुछ ही सेकेंडों में नष्ट हो जाती है। अब तक देश की 9.60 लाख हेक्टेयर भूमि नष्ट हो चुकी है। हर साल 5.3 अरब टन मिट्टी की ऊपरी परत जल कटाव से नष्ट हो रही है। दशकों की उपेक्षा के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने मिट्टी की सेहत की सुध लेते हुए 19 फरवरी 2015 को राजस्थान के सूरतगढ़ में स्वस्थ धरा-खेत हरा थीम के साथ मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना शुरू की। इस योजना के तहत साल में दो बार मिट्टी के नमूने लिए जाते हैं अर्थात रबी और खरीफ फसल की कटाई के बाद या जब खेत में कोई फसल न लगी हो। मृदा स्वास्थ्य कार्ड मिट्टी में मौजूद 12 तत्वों की मात्रा दिखाता है। मृदा स्वास्थ्य कार्ड तैयार होने के बाद कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी, कृषि विज्ञान केंद्र, कृषि सखी आदि किसानों को सुझाव देते हैं कि किस मिट्टी में किस उर्वरक का प्रयोग किया जाए। इससे रासायनिक उर्वरकों के अनावश्यक और असंतुलित इस्तेमाल में कमी आई है। गुजरात में मृदा स्वास्थ्य कार्ड को मिली सफलता को देखते हुए ही प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेन्द्र मोदी ने इसे पूरे देश में लागू किया। इस योजना के एक दशक पूरा होने तक देश में 24.74 करोड़ मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरित किए जा चुके हैं।

आज का विचार

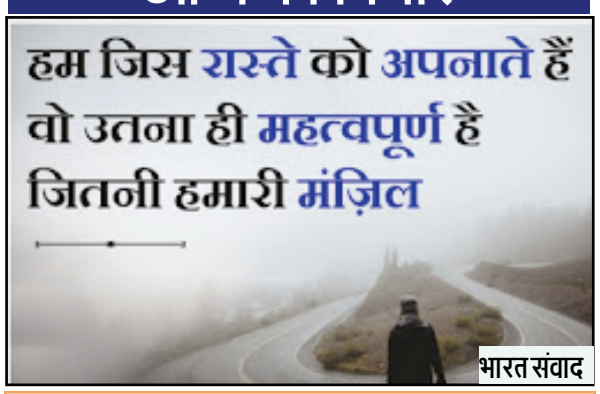

राशिफल

मेष : आज भूमि, भवन, दुकान व फैक्टरी आदि के खरीदने की योजना बनेगी। रोजगार में वृद्धि होगी। उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। अपरिचितों पर अतिविश्वास न करें। प्रमाद न करें। शारीरिक कष्ट संभव है। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। कुबुद्धि हावी रहेगी। स्वास्थ्य कमजोर रहेगा।

वृष : वृष आज कार्यप्रणाली में सुधार होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। पार्टनरों का सहयोग मिलेगा। कारोबारी अनुबंधों में वृद्धि हो सकती है। समय का लाभ लें। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। नेत्र पीड़ा हो सकती है। कानूनी बाधा आ सकती है। विवाद न करें।

मिथुन : आज ऐश्वर्य के साधनों पर बड़ा खर्च हो सकता है। जल्दबाजी न करें। कष्ट, भय, चिंता व बेचैनी का वातावरण बन सकता है। कोर्ट व कचहरी के काम मनोनुकूल रहेंगे। जीवनसाथी से सहयोग मिलेगा। प्रसन्नता रहेगी। मातहतों से संबंध सुधरेंगे। व्यवसाय ठीक चलेगा।

कर्क : आज स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। विवाद से क्लेश संभव है। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में लापरवाही न करें। अपेक्षित कार्यों में अप्रत्याशित बाधा आ सकती है। तनाव रहेगा। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। दूसरों के झगड़ों में न पड़ें। राज्य के प्रतिनिधि सहयोग करेंगे।

सिंह : कोर्ट व कचहरी के काम अनुकूल होंगे। पूजा-पाठ में मन लगेगा। तीर्थयात्रा की योजना बनेगी। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। व्यवसाय ठीक चलेगा। सुख के साधनों पर व्यय हो सकता है। पारिवारिक सहयोग मिलेगा। प्रमाद न करें। बेचैनी रहेगी। चोट व रोग से बचें। काम का विरोध होगा। तनाव रहेगा।

कन्या : आज व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। आय के नए स्त्रोत प्राप्त हो सकते हैं। व्यापार-व्यवसाय में लाभ होगा। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। बेचैनी रहेगी। बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। थकान महसूस होगी। वरिष्ठजन सहयोग करेंगे।

तुला : आज स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। किसी विवाद में उलझ सकते हैं। चिंता तथा तनाव रहेंगे। जोखिम न उठाएं। घर-बाहर असहयोग मिलेगा। अपेक्षाकृत कार्यों में विलंब होगा। आय में कमी हो सकती है। अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे। कर्ज लेना पड़ सकता है।

वृश्चिक : आज रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे। अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। सट्टे व लॉटरी से दूर रहें। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। कोई बड़ी समस्या से छुटकारा मिल सकता है। आय में वृद्धि होगी। प्रसन्नता में वृद्धि होगी। पारिवारिक चिंता बनी रहेगी।

धनु : आज आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। भाइयों का सहयोग प्राप्त होगा। परिवार के साथ मनोरंजन का कार्यक्रम बन सकता है। व्यवसाय ठीक चलेगा। प्रमाद न करें। लेन-देन में सावधानी रखें। शारीरिक कष्ट संभव है। परिवार में तनाव रह सकता है।

मकर : आज शत्रु नतमस्तक होंगे। विवाद को बढ़ावा न दें। प्रयास सफल रहेंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आय के स्त्रोतों में वृद्धि हो सकती है। व्यवसाय ठीक चलेगा। चोट व रोग से बाधा संभव है। फालतू खर्च होगा। मातहतों का सहयोग प्राप्त होगा। प्रसन्नता रहेगी। जल्दबाजी न करें।

कुंभ : आज आवश्यक वस्तु समय पर नहीं मिलेगी। तनाव रहेगा। वाणी पर नियंत्रण रखें। किसी के व्यवहार से क्लेश हो सकता है। पुराना रोग उभर सकता है। दुःखद समाचार मिल सकता है, धैर्य रखें। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। प्रतिद्वंद्विता बढ़ेगी। पारिवारिक चिंता में वृद्धि होगी।

मीन : आज विद्यार्थी वर्ग सफलता अर्जित करेगा। पठन-पाठन में मन लगेगा। दूर यात्रा की योजना बन सकती है। मनपसंद भोजन का आनंद प्राप्त होगा। वरिष्ठजनों का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। बेचैनी रहेगी। धनार्जन सुगम होगा।

ज्योतिष सेवा केन्द्र
ज्योतिषाचार्य पंडित अतुल शास्त्री

मुफ्त रेवड़ी की राजनीति पर रोक के संकेत, शीर्ष अदालत पर टिकी नजर

रेवड़ी राजनीति की होड़ शुरू करने वाली आम आदमी पार्टी की दिल्ली में हार आशा की पहली किरण बनी है। दूसरी उम्मीद जस्टिस गवई के अवलोकन से जुड़ी है। अब नजरें इसी पर टिकी होंगी कि शीर्ष अदालत में रेवड़ी राजनीति के पक्ष और विपक्ष में किसी प्रकार की दलीलें दी जाती हैं और उससे क्या फैसला निकलता है?

दिल्ली विधानसभा में राजनीतिक दलों के बीच लोकलुभावन घोषणाओं की होड़ लगी हुई थी। संयोग से इसी दौरान उच्चतम न्यायालय में भी ऐसी घोषणाओं से जुड़े मामले की सुनवाई चल रही थी। सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश जस्टिस बीआर गवई ने ऐसी घोषणाओं के लिए राजनीतिक दलों को आड़े हाथों लेते हुए कहा कि इनके जरिये लोगों को परजीवी बनाया जा रहा है। जस्टिस गवई ने कहा कि चुनावी प्रलोभन लोगों को काम करने के लिए हतोत्साहित कर रहे हैं। महाराष्ट्र में कामगारों की किल्लत के संदर्भ में उन्होंने यह टिप्पणी की। राज्य में लाडकी बहिन जैसी योजनाओं के चलते काम किए बिना ही कुछ पैसे मिल जा रहे हैं तो मुफ्त अनाज की सुविधा भी मिली हुई है। परिणामस्वरूप काम करने के लिए लोगों की कमी हो गई है। कुछ दिन पहले ऐसे ही एक मामले की सुनवाई करते हुए उन्होंने कहा था कि राज्यों के पास निठल्लों को पैसे देने के लिए संसाधनों की कमी नहीं, मगर जब न्यायिक अधिकारियों को वेतन-पेंशन जैसी सुविधाएं देने की बारी आती है तो वे खाली खजाने का रोना रोने लगते हैं। दिल्ली में आम आदमी पार्टी यानी आप की रेवड़ी राजनीति को जनता ने खारिज कर दिया, लेकिन ऐसी राजनीति को लेकर बहस पर अभी विराम नहीं लगा है। इस राजनीति की बात करें तो तमिलनाडु में इसकी शुरूआत हुई, जहां मतदाताओं को लुभाने के लिए टेलीविजन सेट, मिक्सर ग्राइंडर, कंप्यूटर-लैपटाप और अन्य घरेलू उपकरणों के साथ ही मुफ्त राशन दिया जाने लगा। हालांकि कर्नाटक

और केरल जैसे पड़ोसी राज्यों को यह बीमारी लंबे समय तक संक्रमित नहीं कर पाई थी, लेकिन भारतीय राजनीति में अरविंद केजरीवाल के उभार ने रेवड़ी राजनीति के समीकरण पूरी तरह बदल दिए। केजरीवाल मुफ्त बिजली, पानी और परिवहन सेवाओं के जरिये मुफ्तखोरी की राजनीति को एक अलग ही स्तर पर ले गए। तमिलनाडु और दिल्ली की रेवड़ी राजनीति में एक मूलभूत अंतर भी था कि तमिलनाडु में घरेलू उपकरण जैसी सौगात के लिए एकबारगी खर्च होता था, लेकिन आप की रेवड़ी राजनीति ने बिजली-पानी जैसी निरंतर चलने वाली सुविधाओं के लिए भी लोगों को मुफ्तखोरी की आदत लगा दी। यानी इनके लिए सरकारी खजाने पर निरंतर बोझ पड़ना तय होता है। अपनी इन पेशकशों के दम पर आम आदमी पार्टी ने दिल्ली के दो विधानसभा चुनावों में 70 में से 60 से अधिक सीटें हासिल कीं, जिसमें विपक्ष हाशिए पर चला गया तो 15 साल तक राष्ट्रीय राजधानी की सत्ता पर काबिज रही कांग्रेस उसके बाद से खाता तक नहीं खोल पाई। वहीं, आप दिल्ली माडल के दम पर पंजाब की सत्ता हासिल करने से लेकर कई राज्यों में पैठ बनाकर राष्ट्रीय दल बन गई। दिल्ली राज्य की सत्ता में भाजपा का 27 साल से चला आ रहा वनवास अगर समाप्त हुआ है तो उसमें पार्टी के उस वादे को अनदेखा नहीं किया जा सकता, जिसमें उसने कहा कि आप सरकार की सभी कल्याणकारी योजनाएं न केवल चालू रखी जाएंगी, बल्कि उन्हें और सक्षम बनाया जाएगा। कांग्रेस भले ही दिल्ली में किसी तरह पनप न पा रही हो, लेकिन उसने भी गारंटी के नाम पर चुनाव जीतने के लिए बड़े-बड़े वादों का दांव चला। कर्नाटक की सत्ता में पार्टी ऐसे ही लोकलुभावन वादों के जरिये सत्ता में आ सकी। हालांकि इन वादों की इतनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ी कि राज्य के उपमुख्यमंत्री डीके शिवकुमार को सार्वजनिक रूप से कहना पड़ा कि मुफ्त की योजनाओं से जुड़े वादों की पूर्ति के बाद विकास कार्यों के लिए कुछ खास धन नहीं बचा। हिमाचल की कांग्रेस सरकार को भी ऐसे ही वादों के चलते मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है। दिल्ली में आप और कर्नाटक में कांग्रेस के लोकलुभावन वादों से सबक लेते हुए भाजपा ने भी इस मोर्चे पर अपने प्रयास तेज किए। भाजपा द्वारा मध्य प्रदेश में अपनी सत्ता कायम रखने और छत्तीसगढ़ एवं राजस्थान जैसे राज्य कांग्रेस से झटकने में महिलाओं के लिए की गई पार्टी की विशेष पेशकशों की अहम भूमिका देखी गई। तेलंगाना में जनता ने कांग्रेस की गारंटियों पर भरोसा जताया, जबकि भाजपा ने वहां भी लाडली लक्ष्मी के जरिये 1,250 रुपये प्रति माह नकदी से लेकर कालेज जानी वाली लड़कियों के लिए स्कूटी का वादा किया था। संविधान में निर्दिष्ट राज्य के नीति निदेशक तत्वों में केंद्र और राज्य सरकारों को नागरिकों का जीवन स्तर सुधारने के लिए आवश्यक कदम उठाने का निर्देश दिया गया है, लेकिन दिल्ली की आप सरकार ने लोगों के आर्थिक दर्जे को दरकिनार करते हुए सभी को मुफ्त बिजली-पानी देना और महिलाओं को मुफ्त बस यात्रा करानी शुरू कर दी। इसकी देखादेखी कांग्रेस ने भी कर्नाटक में महिलाओं को हर महीने नकदी, हर घर को 200 यूनिट मुफ्त बिजली के अलावा महिलाओं को मुफ्त बस यात्रा की सुविधा देना शुरू कर दिया। इसके बाद तो इस सिलसिले ने ऐसा जोर पकड़ा कि भाजपा भी पीछे नहीं रही। मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़ और तेलंगाना विधानसभा चुनाव के बाद हाल के हरियाणा एवं महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में भी राजनीतिक दलों की यही मंशा दिखी। दिल्ली में भी भाजपा ने बढ़-चढ़कर घोषणाएं कीं। आप ने महिलाओं को हर महीने 2,100 रुपये की राशि देने का वादा किया तो भाजपा ने 2,500 रुपये देने की घोषणा की। झुग्गी बस्तियों में रहने वालों को लुभाने के लिए भाजपा ने ह्यअटल कैंटीनह्ल में पांच रुपये में पोषक आहार उपलब्ध कराने का वादा भी किया। ऐसा प्रतीत होता है कि भाजपा ने केजरीवाल को उनकी ही नीतियों से मात देने की बिसात बिछाई थी। हालांकि भाजपा के ये वादे भी सरकारी खजाने से ही पूरे होंगे। रेवड़ी राजनीति पर अभी तक के कम से कम दो संकेत कुछ सुकून देने वाले रहे। रेवड़ी राजनीति की होड़ शुरू करने वाली आम आदमी पार्टी की दिल्ली में हार आशा की पहली किरण बनी है। दूसरी उम्मीद जस्टिस गवई के अवलोकन से जुड़ी है। अब नजरें इसी पर टिकी होंगी कि शीर्ष अदालत में रेवड़ी राजनीति के पक्ष और विपक्ष में किसी प्रकार की दलीलें दी जाती हैं और उससे क्या फैसला निकलता है?

किताबों का कोना

विजय गर्ग

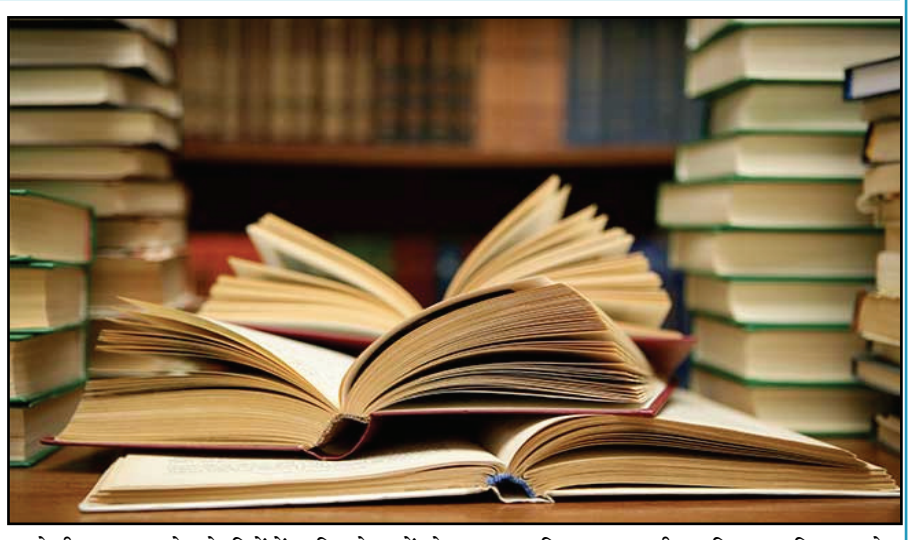

हर हाथ में स्मार्टफोन के दौर में पुस्तक पढ़ने की संस्कृति को लेकर अक्सर चिंता जताई जाती है। मगर सच यह है कि आज भी ऐसे लोगों की खासी संख्या है, जो किताबों से प्रेम करते हैं और उन्हें भी किताबों की दुनिया सजने की खबर मिलती है, वे वहां पहुंचते हैं। पहले भी और आज भी, मस्तिष्क में किसी भी संदर्भ में सामूहिकताबोध या फिर लोगों के एक जगह जमा होने से जो भाव पैदा होता है, उसका अर्थ धार्मिक या कोई सांस्कृतिक उत्सव मनाने से ही लिया जाता है। दौड़-भाग के इस समय में ऐसे जमावड़े का शुद्ध मतलब मेल-मिलाप ही माना जाता है, लेकिन बात पुस्तकों की हो, तो उसे क्या कहें- पुस्तकों का संसार या लोगों तक पहुंची पुस्तकें ? यह भी कह सकते हैं कि पुस्तकों के पीछे दर्शक - पाठक। इनके पीछे आयोजक और प्रकाशक । सबके आगे पुस्तकों की निर्बाध चाहत। जहां अलग-अलग भाषाओं की पुस्तकों के प्रेमी जुटते हैं, जहां पाठक जुड़ते हैं, पुस्तकों को छापने वाले प्रकाशक- गण एकत्रित होते हैं और लेखकों का भी जमावड़ा होता है, ऐसी ही जगहों से पुस्तक संस्कृति जीवन पाती है। मगर विडंबना यह है कि प्रचारित मेले को ही लोग मुख्य रूप से पुस्तक मेला के रूप में जानते हैं, जबकि पुस्तकें पढ़ने की संस्कृति एक विस्तृत सागर है, जहां से ज्ञान अपना जीवन पाता है। लेखकों को अपनी पुस्तकों के परिदृश्य के विस्तार को अपनी आंखों से देखने में सुख मिलता है कि उनके विचार लोगों तक पहुंच रहे हैं। ऐसा तब भी है, जब आज वह समय नहीं रहा, जब कभी पुस्तकें बड़ी शिद्दत से पढ़ी जाती थीं, पुस्तक - प्रेमी जब भी किताबें अपने हाथों में लिए इतराते चलते थे, तब पास-पड़ोसी तक जान जाते थे कि यह जरूर कहीं पढ़ता है। विचारों की जगह हाथ में पुस्तकें लिए विद्यार्थी बच्चे कितने भी बड़े हो जाएं, पर रहते छोटे बच्चे ही। स्कूल-कालेज के दिनों में कुछ बच्चे अपनी पुस्तकों में छिपा कर चिट्ठी-पाती भी किया करते थे। इसके बारे में उनके साथ वाले किसी न किसी रूप में जरूर जान जाते थे। हालांकि उनके घर वाले बेखबर हुआ करते थे। आज के युवक खुले विचारों के हैं। सोशल मीडिया ने समय को पढ़ने की अपेक्षा देखने में परिवर्तित कर दिया है। परिवर्तन बलवान ही नहीं, प्रगति के लिए भी होता है । इसलिए समय को भगवान मानते हैं। आज के प्रगतिवादी भी जमीन को देखने से पहले आसमान को देखते हैं। शुरू के दिनों में बच्चे पुस्तकों को देख अक्सर रोते हैं। किताबें प्रकाशित करने वालों का अलग रोना होता है। कि पुस्तकें बिकती नहीं। ऐसी स्थिति में लेखक भी यही मान लेते हैं। हालांकि इसके अतिरिक्त उनके पास और क्या उपाय होता है। धैर्य ही उनके लेखन की वास्तविक जननी है। इतना जानते-समझते भी पुस्तक और पढ़ने की संस्कृति के विकास के बजाय इसे आर्थिक हिसाब- किताब और मुनाफे का मौका बना लाया जाता है। यों भी सरकार किसी की हो, उसके हर फैसले को मान मिल ही जाता है, यह मान देने वाला चाहे पठन- पाठन से जुड़ा कोई भी पक्ष हो। सबकी नजरें किसी न किसी औचित्य की ओर इंगित होती हैं। कितने लिखने वालों को इसका फल मिलता है, यह नहीं पता, लेकिन इस सबका बोझ उठाना पड़ता है पाठक को। रुचि का विस्तार बहरहाल, किताबों के लिए मेल-मिलाप और एक मकसद के लिए होता है- पुस्तक-संस्कृति को जिंदा रखना। ठीक इसी तर्ज पर कभी-कभार सालाना स्तर पर आयोजन जैसे प्रयास किए जाते हैं, ताकि पुस्तक पढ़ने की प्रवृत्ति कम न हो। एक समान रुचि वाले लोगों के एक जगह जमा होने पर इस संस्कृति के विस्तार की संभावना पैदा होती है। लेकिन इसके समांतर यह आमतौर पर देखा जा सकता है कि अन्य अभिरुचियों के लोग भी सामूहिकताबोध की वजह से पुस्तकों के संसार में कदम रखते हैं और उसके बाद उनकी रुचि किताबों में भी विकसित होने लगती है। ऐसी जगहों पर सब तरह के लोग मिल सकते हैं। मेलजोल करने वाले भी और छत्तीस के आंकड़े वाले भी बहुत अच्छी किताबें, तो कुछ ऐसी किताबें भी, जिनको देख हैरानी हो । कितना कुछ मिल जाता है, यह पुस्तक संस्कृति से प्रेम करने वाले ही बता सकते हैं। सहयोग की राहकरीब डेढ़ सौ करोड़ की जनसंख्या वाले इस देश में साक्षरता के आंकड़े के मुताबिक मोटे तौर पर कितने लोग किताबें पढ़ने वाले होंगे? जगह-जगह लगने वाले पुस्तक मेलों में यह भी मान लिया जाए कि दस करोड़ दर्शकों ने अपनी हिस्सेदारी दिखाई है, तब भी प्रकाशक खुशहाल रहते हैं। दिखाने बताने को जो कहा जाए। पुस्तकें, उनके लेखकों को मिलने वाली रायल्टी आदि की बातें इतनी जटिल हैं और खासकर हिंदी की दुनिया में कि इस मसले पर बात करना अपने आप में चुनौतीपूर्ण है। किसकी किताब किस मोड़ पर रुक जाए, कहा नहीं जा सकता। इस तरह की दुनिया में अदब का मतलब पुस्तकों के संसार में अदब से चलना होता है। इसलिए हर स्थिति में मयार्दा में रहना बुद्धिमान कहलाता है। आवश्यकता इस बात की है कि पुस्तक - संस्कृति के विकास और विस्तार में प्रकाशकों लेखकों के हित में अगर सरकार के स्तर पर कोई ठोस कदम उठाए जाएं, तो सबसे पहले किताबें लोगों तक पहुंचाने वालों के लिए कुछ रियायत हो, ताकि बड़े के साथ-साथ छोटे प्रकाशक भी इस पुस्तक संसार में अपनी जगह बना सकें। साथ ही पुस्तकों के बढ़े डाक-शुल्क कम हों, तो सभी लोगों का भला होगा। वरना किताबों और उनकी कीमतों तक पहुंच के लिहाज से देखा जाए तो पाठकों की पुस्तकों से दूरी की वजह समझी जा सकती है। और फिर कई पुस्तकें मात्र सफेद, पीले, नीले या हरे रंग में बंट कर रह जा सकती हैं।

सनातनी होना गौरव-गर्व की बात

संजीव ठाकुर

वेद तथा सनातनी ग्रंथों से मानव जीवन परिष्कृत होता है और सदाचार तथा वैदिक धर्म का ज्ञान मानव धर्मार्थ की खोज में एक यज्ञ की तरह है भारतीय ऋग्वेद, अथर्ववेद और अनेक वेदों में इतनी शक्ति ऊर्जा और अर्थ छुपा हुआ है कि उसका अध्ययन मनन और चिंतन करने से भारत विश्व गुरु बनने की क्षमता रखता है। भारत की योग विद्या पूरे विश्व में अमेरिका सहित यूरोप में अपनाई गई है। यह अलग बात है कि कुछ देशों के प्रशासको द्वारा अपनी सनक एवं विस्तार वादी मानसिकता के कारण यूक्रेन में युद्ध की स्थिति बन कर पूरे विश्व में वैश्विक युद्ध की संभावनाएं बन गई हैं। इसका हल मी भारतीय संस्कृति संस्कारों में छुपा हुआ है उसे बस अपनाने की जरूरत है। भारतीय संस्कृति आज महावीर तथा बुध के पूरे विश्व में करोड़ों अनुयाई हैं, और दोनों ने श्रम तथा सार्थकता को जीवन में अपनाने को ही महत्व दिया था। सफलता उनके लिए मिथ्या के बराबर ही थी गुरु नानक देव द्वारा प्रतिपादित सरबत दा भला, हो या महात्मा गांधी का सर्वोदय, ईसा मसीह की करुणा, मोहम्मद साहब, टैगोर का मानवतावाद या नेहरू का अंतरराष्ट्रीय राष्ट्रवाद जीवन के श्रम तथा सार्थकता की खोज में बड़े महत्वपूर्ण उदाहरण है व्यक्तिगत और पारिवारिक स्तर पर देखा जाए तो महज रोजगार की तलाश विवाह संतानोत्पत्ति, बच्चों का भरण पोषण तथा सेवानिवृत्ति ही जीवन नहीं है। इसमें सामुदायिक श्रम और सार्थकता का समावेश होना समीचीन है हालांकि इस बात में कोई दो मत नहीं कि पारिवारिक उत्तरदायित्व का निर्वहन समाजिक मूलभूत आवश्यकता है पर इसके साथ साथ कुछ ऐसा सार्थक श्रम किया जाना चाहिए जो न केवल आत्मिक संतोष का अनुभव प्रदान करें, बल्कि सामाजिक हित और वैश्विक शांति में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दें, और समाज को दिशा देने वाली कोई परिणति समाज के सम्मुख प्रकट हो

जिससे समाज के लोगों का जीवन परिष्कृत हो इसी संदर्भ में राजा राममोहन राय, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, सर सैयद अहमद खान, दयानंद सरस्वती, विवेकानंद ने हमेशा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध अभियान चलाकर जीवन में श्रम तथा सार्थकता का महत्व बढ़ाकर सामाजिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया था। यह स्पष्ट रूप से दिखाई देता है कि जीवन की असली खोज श्रम सार्थकता की उपलब्धि ना होती और तथाकथित सफलता के शिखर पर व्यक्ति बैठ जाता है और शांत हो जाता, तो सफलता के शिखर पर बैठे बिलगेट, वारेन बुफेट जैसे लोग अपनी अकूत संपत्ति का बड़ा भाग सामाजिक उद्देश्य के लिए दान नहीं करते। सुंदरलाल बहुगुणा चिपको आंदोलन चलाकर जल तथा पर्यावरण संरक्षण की बात नहीं करते। कैलाश सत्यार्थी बचपन बचाओ आंदोलन के माध्यम से बाल संरक्षण के अधिकारों का झंडा बुलंद नहीं कर पाते। थॉमस अल्वा एडिसन, आइंस्टीन, मैडम क्यूरी और राइट बंधुओं के श्रम और सार्थकता के प्रयास में ही सफलता का परचम फैलाया है। पर इन सब के पीछे उनकी असाध्य मेहनत और दिमागी सार्थकता ही मुख्य कारक बन कर उन्हें उत्प्रेरित करती रहे है। पर दूसरी तरफ यह भी सत्य है कि जीवन में सार्थकता की खोज सफलता के अभाव में संभव नहीं है। क्योंकि श्रम और सार्थकता का महत्व तभी तक है जब तक वह सफल ना हो, परंतु सफलता ही मनुष्य की अंतिम परिणति नहीं होनी चाहिए। अन्यथा जीवन में मानवीय मूल्यों का महत्व नगण्य में होने की संभावना बनी रहती है। अतः श्रम मेहनत और सार्थकता समेकित रूप से मिलकर एक बड़ी सफलता को जन्म देते हैं। श्रम तथा सार्थकता तभी प्राप्त होती है, जब सफलता का आधार प्राप्त हो जाए। पर मूलत सफल होना ही पर्याप्त नहीं है। और जीवन की असली खोज निरंतर श्रम तथा सार्थकता है। केवल सफलता आपको अस्थाई तथा तत्कालिक मानसिक शारीरिक सुख प्रदान कर सकती है। पर चिरस्थाई तथा आत्मिक संतोष के लिए उसमें श्रम तथा सार्थकता का समावेश होना अत्यंत आवश्यक होता है।

महाराष्ट्र में फ्रांसीसी कंपनी के गंभीर आरोपों पर घिरे शिंदे, विपक्ष के हमले के बीच दिए जांच के आदेश

- महाराष्ट्र में फ्रांसीसी कंपनी के आरोपों पर घमासान
- एकनाथ शिंदे ने घिरने के बाद दिए जांच के आदेश
- पिछली सरकार के दौरान परेशान करने के है आरोप

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबईः महायुति सरकार में 'टेंशन' के बीच महायुति के तीसरे मंत्री और डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे घिरते दिख रहे हैं। मुंबई में मेट्रो निर्माण कार्य से जुड़ी फ्रांसीसी इंजीनियरिंग कंपनी सिस्ट्रा ने मुंबई महानगर क्षेत्र विकास प्राधिकरण के सीनियर अधिकारियों के ऊपर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए हैं। कंपनी ने फ्रांसीसी दूतावास के माध्यम से यह शिकायत दर्ज कराई है। धनंजय मुंडे और माणिकराव कोकाटे के बाद अब एकनाथ शिंदे को लेकर महाराष्ट्र की राजनीत गरमाई दिख रही है क्योंकि मुख्यमंत्री रहते हुए यह एमएमआरडीए का काम शिंदे के आधीन था। अब भी वही शहरी विकास विभाग को संभाल रहे हैं। फ्रांसीसी कंपनी के आरोपों के सामने आने के बाद शिवसेना यूबीटी नेता आदित्य ठाकरे ने निशाना भी साधा है। ठाकरे ने कहा है कि शिंदे सरकार के घोटाले अब सामने आ रहे हैं। इस मुद्दे पर सीएम फडणवीस की प्रतिक्रिया भी सामने आई है।मेट्रो निर्माण कार्य से जुड़ी फ्रांसीसी इंजीनियरिंग कंपनी सिस्ट्रा ने अपनी शिकायत में कहा है कि एमएमआरडीए के अधिकारी अनुचित लाभ मांगा, भुगतान में देरी की। इतना ही नहीं ठेकेदारों का ऑर्डर बढ़ाने के लिए फर्म पर दबाव डाला। कंपनी ने कहा है कि प्रोजेक्ट के लिए कर्मियों की नियुक्ति की मंजूरी रोकी गई।

राहुल गांधी और उद्धव ने नहीं किया कुंभ स्नान, रामदास आठवले ने की बहिष्कार की अपील

केंद्रीय मंत्री रामदास आठवले ने महाकुंभ में उद्धव ठाकरे और राहुल गांधी के न पहुंचने को लेकर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि उद्धव ठाकरे और राहुल गांधी को कुंभ में स्नान करने जाना चाहिए था। उन्होंने वहां न जाकर हिंदुओं का अपमान किया है। आठवले ने कहा कि महाकुंभ में 65 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने स्नान किया।

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

- रामदास आठवले ने राहुल और उद्धव पर महाकुंभ में न जाने का आरोप लगाया
- 65 करोड़ श्रद्धालुओं के स्नान के अवसर पर नेताओं का न जाना अपमान है
- आठवले ने मुस्लिम वोटरों को लुभाने का आरोप लगाया दोनों नेताओं पर

मुंबईः केंद्रीय मंत्री रामदास आठवले ने महाकुंभ में उद्धव ठाकरे और राहुल गांधी के न पहुंचने को लेकर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि उद्धव ठाकरे और राहुल गांधी को कुंभ में स्नान करने जाना चाहिए था। उन्होंने वहां न जाकर हिंदुओं का अपमान किया है। आठवले ने कहा कि महाकुंभ में 65 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने स्नान किया। यह अवसर 144 साल बाद आया था। यह उनका व्यक्तिगत निर्णय हो सकता है, लेकिन राहुल गांधी और उद्धव ठाकरे को स्नान करने जाना चाहिए था। इन नेताओं को हिंदू वोटरों की भावनाओं का सम्मान करना चाहिए था, खासकर जब वे खुद हिंदू हैं। उनका मानना है कि उद्धव ठाकरे, जो हमेशा हिंदुत्व की बात करते रहे हैं, का इस अवसर पर नहीं जाना गलत है और यह हिंदुओं का अपमान है। मुस्लिम वोटरों को लुभाने के लिए महाकुंभ में नहीं गए राहुल-उद्धवकेंद्रीय मंत्री ने कहा कि हिंदू वोटरों को इन नेताओं का बहिष्कार करना चाहिए और चुनावों में इन्हें सबक सिखाना चाहिए। मुस्लिम वोटरों को लुभाने के कारण वे महाकुंभ में नहीं गए, लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि मुस्लिम वोट बीजेपी को भी मिलते हैं, इसलिए उन्हें यह कदम उठाने की जरूरत नहीं थी। उन्होंने आगे कहा कि बीजेपी का नेतृत्व देश को आगे बढ़ा रहा है और ये दोनों नेता मोदी के खिलाफ जो नाराजगी दिखा रहे हैं, उसका उन्हें कोई फायदा नहीं होगा।आंबेडकर की तस्वीर को लेकर क्या बोले आठवलेदिल्ली में आम आदमी पार्टी की ओर से बीजेपी पर आरोप लगाए गए कि उन्होंने मुख्यमंत्री कार्यालय से डॉ भीमराव आंबेडकर और भगत सिंह की तस्वीरें हटा दीं और उनकी जगह महात्मा गांधी, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तस्वीरें लगाईं। इस पर रामदास आठवले ने कहा कि बाबासाहेब आंबेडकर को सम्मान देने का काम नरेंद्र मोदी ने सबसे ज्यादा किया है।

फास्ट ट्रैक

नोटबुक के पन्नों में 400000 डॉलर, दुबई जा रही 3 छात्राओं की कलाकारी देखकर चौंक गए कस्टम अफसर

- पुणे में कस्टम विभाग ने विदेश मुद्रा की बड़ी तस्करी को पकड़ा
- नोटबुक के पन्नों में छिपाए गई थी 4 लाख डॉलर की करेंसी
- कस्टम विभाग ने दुबई से डिपोर्ट हुई तीन छात्राओं को पकड़ा

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबई /पुणेःकस्टम डिपार्टमेंट ने दुबई जा रही तीन लड़कियों से 4 लाख डॉलर यानी लगभग 3.47 करोड़ रुपये बरामद किए हैं। ग्रैजुएशन की इन छात्राओं ने इतनी बड़ी रकम नोटबुक के पन्नों के बीच छिपा रखी थी। कस्टम अधिकारियों को शक है कि यह विदेशी मुद्रा हवाला के जरिये दुबई भेजी जा रही थी। हवाला रैकेट ने विदेशी मुद्रा की तस्करी के लिए 20 साल की छात्रों का इस्तेमाल किया है। इस मामले में पुणे की एक ट्रैवल एजेंट खुशबू अग्रवाल और मुंबई के एक फॉरेक्स ट्रेडर को गिरफ्तार किया गया है। ट्रैवल एजेंट ने ही इन छात्राओं की दुबई यात्रा बुक की थी। इंटेलिजेंस यूनिट दुबई से वापस बुलवायापुणे कस्टम्स के मुताबिक अफसरों को पहले से ही सूचना मिली थी कि तीन छात्राएं नोटबुक्स में छुपाकर बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा की तस्करी करने की कोशिश कर रही हैं। भरतीय अधिकारियों के अनुरोध परदुबई पहुंचने के बाद तीनों छात्राओं को वापस भारत भेज दिया गया। 17 फरवरी को पुणे एयरपोर्ट पर दुबई से पुणे आ रही इन तीनों छात्राओं को रोका गया। एयर इंटेलिजेंस यूनिट (अकव) के अधिकारियों ने इनकी पूरी तरह से तलाशी ली। तलाशी में उन्हें 400,100 डॉलर मिले। ये 100 डॉलर के नोट कई नोटबुक्स के पन्नों के बीच छुपाए गए थे, जो इन छात्राओं के बैग में थे।ट्रैवल एजेंट और फॉरेक्स ट्रेडर गिरफ्तारतीनों छात्राएं पोस्ट ग्रैजुएशन की पढ़ाई कर रही हैं। एयर इंटेलिजेंस यूनिट के अधिकारियों की पूछताछ में पता चला कि उन्होंने अपनी यात्रा पुणे की एक ट्रैवल एजेंट खुशबू अग्रवाल के जरिए बुक की थी। छात्राओं ने बताया कि अग्रवाल ने ही उन्हें पैसे से भरे बैग दिए थे। यह घटना हवाला के जरिए पैसे की तस्करी के एक बड़े रैकेट की ओर इशारा करती है। हवाला एक गैर-कानूनी तरीका है जिससे लोग बिना किसी आधिकारिक रिकॉर्ड के पैसे एक जगह से दूसरी जगह भेजते हैं। जांच अधिकारियों के मुताबिक, इस रैकेट में शामिल अन्य लोगों की भी तलाश जारी हैं। आगे की जांच में इस गिरोह से जुड़े अन्य लोगों का पता चल सकता है।

26 साल की युवती से स्वारगेट स्टैंड पर रेप

- पुणे के स्वारगेट बस स्टैंड में 26 साल की युवती मसे बलात्कार की घटना
- आरोपी का आपराधिक रिकॉर्ड, चोरी और चेन झपटमारी के मामले हैं
- घटना पर विपक्षी नेताओं ने मुख्यमंत्री पर तीखा हमला बोला

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबई /पुणेः महाराष्ट्र के पुणे शहर में शर्मसार करने वाली घटना सामने आई है। महाराष्ट्र परिवहन की एक खड़ी बस में एक व्यक्ति ने 26 साल की महिला से कथित तौर पर बलात्कार किया। पुलिस ने बुधवार को बताया कि आरोपी का आपराधिक रिकॉर्ड है। मंगलवार की सुबह हुई इस घटना पर विपक्षी दलों के नेताओं ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। उन्होंने पुणे क्षेत्र में बढ़ते अपराध से निपटने में विफल रहने के लिए मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के गृह विभाग को दोषी ठहराया। स्वारगेट थाने के एक अधिकारी ने बताया कि संदिग्ध दत्तात्रेय रामदास गाडे (36) के खिलाफ चोरी और चेन झपटमारी के मामले दर्ज हैं। स्वारगेट महाराष्ट्र राज्य सड़क परिवहन निगम (एमएसआरटीसी) के सबसे बड़े बस जंक्शनों में से एक है।

महिला के अनुसार, मंगलवार सुबह करीब पौने छह बजे वह सतारा जिले के फलटण के लिए एक स्टैंड पर बस का इंतजार कर रही थी। तभी एक व्यक्ति उसके पास आया और उससे बातचीत करते हुए उसे 'दीदी' कहकर बुलाया। महिला के अनुसार आरोपी ने उससे कहा कि सतारा के लिए बस दूसरे स्टैंड पर आ गई है। आरोप है कि इसके बाद वह उसे स्टेशन परिसर में ही खड़ी एक खाली 'शिव शाही' एसी बस में ले गया और बस के अंदर की लाइटें चालू न होने के कारण वह पहले तो बस में चढ़ने से हिचकिचाई, लेकिन व्यक्ति ने उसे आश्वस्त किया कि यह सही बस है। बस में रेप कर भागा आरोपीमहिला के अनुसार आरोपी ने उससे कहा कि वह बस में चढ़ने के बाद टॉर्च जलाकर देख सकती है। इसके बाद वह उसके पीछे अंदर गया और फिर दुष्कर्म करके भाग गया। अधिकारी ने कहा कि पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज से आरोपी गाडे की पहचान की और उसे पकड़ने के लिए कई टीम बनाई गई हैं। पुलिस उपायुक्त स्मार्तना पाटिल ने बाद में पत्रकारों को बताया कि सीसीटीवी फुटेज में महिला आरोपी के साथ बस की ओर जाती हुई दिखाई दे रही है। उन्होंने कहा कि घटना के समय बस अड्डा परिसर में कई लोग और कई बसें थीं।डीसीपी ने कहा कि महिला ने घटना के तुरंत बाद पुलिस से संपर्क नहीं किया, बल्कि फलटन जाने वाली बस में सवार हो गई और यात्रा के दौरान अपने दोस्त को फोन पर घटना के बारे में बताया। पाटिल ने कहा कि अपने दोस्त की सलाह पर वह थाने चली गई। अधिकारी ने कहा कि महिला की हालत स्थिर है और उसने पुलिस को स्पष्ट बयान दिया है। उन्होंने कहा कि भारतीय न्याय संहिता के तहत बलात्कार का मामला दर्ज किया गया है। डीसीपी ने बताया कि पुणे जिले के शिकारपुर और शिरुर थानों में गाडे के खिलाफ पहले भी मामले दर्ज किए गए हैं।

मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने नासिक सिंहस्थ कुंभ मेले के लिए बुलाई 'महाबैठक', अजित पवार-एकनाथ शिंदे रहे गायब, उठे सवाल

- महाकुंभ मेला प्रयागराज में संपन्न, महाराष्ट्र में कुंभ मेला की तैयारी
- 2027 में नासिक-त्र्यम्बकेश्वर में सिंहस्थ कुंभ मेला आयोजित होगा
- मुख्यमंत्री ने तैयारी के लिए बैठक बुलाई, उपमुख्यमंत्री रहे अनुपस्थित

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबईः प्रयागराज में आज महाकुंभ मेला संपन्न हो रहा है। इस बीच निकट भविष्य में महाराष्ट्र में कुंभ मेला(आयोजित किया जाएगा। सिंहस्थ कुंभ मेला 2027 में नासिक में आयोजित किया जाएगा। इस कुंभ मेले में देश भर से लाखों श्रद्धालु आते हैं। इसलिए महाराष्ट्र सरकार भी इसी तरह की तैयारी कर रही है। इससे पहले कुंभ मेला 2015-16 में नासिक में आयोजित किया गया था। इसके बाद अब कुंभ मेला आगामी वर्ष 2027 में आयोजित किया जाएगा। सरकार इस कुंभ मेले की तैयारियां पहले से ही कर रही है। यह कुंभ मेला नासिक-त्र्यम्बकेश्वर में आयोजित किया जाता है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कुंभ मेले की तैयारी के लिए आज यानी बुधवार को सह्याद्री गेस्ट हाउस में एक महत्वपूर्ण बैठक बुलाई। लेकिन इस बैठक में राज्य के दोनों उपमुख्यमंत्रियों अजित पवार और एकनाथ शिंदे नहीं आए। दोनों की अनुपस्थिति से राजनीतिक हलकों में तरह-तरह की चर्चाएं शुरू हो गई हैं।नासिक सिंहस्थ कुंभ मेले की तैयारी के लिए सह्याद्रि गेस्ट हाउस में एक बैठक बुलाई गई। बैठक की अध्यक्षता मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने की। इस बैठक में मंत्री गिरीश महाजन और मुख्य सचिव सुजाता सौनिक, शहरी विकास और वित्त विभाग के प्रधान सचिव उपस्थित थे। रेलवे अधिकारी भी उपस्थित थे। लेकिन उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उपमुख्यमंत्री अजित पवार दोनों प्रमुख नेता बैठक में अनुपस्थित रहे। 'एबीपी माझा' ने इस बारे में रिपोर्ट की है। इस बीच एकनाथ शिंदे ने कुंभ मेले की तैयारी के लिए एक बैठक भी की थी। अब देवेंद्र फडणवीस बैठक कर रहे हैं। लेकिन आज की बैठक में दोनों उपमुख्यमंत्रियों के अनुपस्थित रहने का कारण अभी भी स्पष्ट नहीं है।एकनाथ शिंदे की नाराजगी की लगातार हो रही चर्चालगातार चर्चा हो रही है कि उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे नाखुश हैं। यह चर्चा लगातार चल रही है कि एकनाथ शिंदे की राज्य मंत्रिमंडल की बैठक में व्यक्तिगत रूप से जाने के बजाय ऑनलाइन उपस्थिति और मुख्यमंत्री रहते हुए शिंदे की ओर से स्वीकृत परियोजनाओं के खिलाफ भ्रष्टाचार के आरोप लगने के बाद मुख्यमंत्री की ओर से जांच के आदेश देने जैसी घटनाओं से उनकी नाराजगी लगातार बढ़ रही है।

मुंबई की झीलों में बचा सिर्फ 50% पानी, मॉनसून लेट हुआ तो मच सकता है हाहाकार

मुंबई की झीलों में पानी की मात्रा 50% से कम बची है। बारिश में देरी और कम स्टोरेज के चलते पानी की कटौती हो सकती है। प्रशासन जल्द ही राज्य सरकार से अतिरिक्त पानी की मांग करेगा। इस बार पानी के लिए हाहाकार मच सकता है। मॉनसून में देरी हुई तो समस्या और बढ़ सकती है।

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबई : गर्मी और उमस के बीच मुंबईकरों के लिए यह चिंता का विषय है कि मुंबई को पानी की आपूर्ति करने वाली झीलों में 50% पानी का स्टॉक बचा है। बीएमसी के अनुसार यदि मॉनसून समय से सक्रिय हुआ, तो ज्यादा परेशानी नहीं होगी। मॉनसून देरी से आया और झील क्षेत्रों में अच्छी बारिश नहीं हुई, तब मुश्किल होगी। मुंबई को अपर वैतरणा, तानसा, भातसा, मोडक सागर, मध्य वैतरणा, विहार एवं तुलसी झील से पानी की सप्लाई होती है। इन सातों झीलों में 25 फरवरी सुबह 6 बजे तक 731831 एमएलडी पानी बचा है। यह झीलों की कुल क्षमता का 50.56% है, हालांकि यह पिछले तीन साल में सबसे ज्यादा है। वर्ष 2024 में इस दौरान झीलों में सबसे कम 648535 एमएलडी यानी 44.81% पानी का स्टॉक था।

ब्रह्मा कुमारीज मुलुंड द्वारा महाशिवरात्रि पर्व पर त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव मनाया गया

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबई ,प्रजापिता ब्रह्मा कुमारीज मुलुंड के प्रधान कार्यालय पर राजयोगिनी डॉ बी के गोदावरी दीदी की अध्यक्षता में महाशिवरात्रि पर्व पर त्रिमूर्ति शिव जयंती महोत्सव का आयोजन किया गया इस अवसर पर प्रमुख अतिथि के रूप में वरिष्ठ समाजसेवी डॉ बाबुलाल सिंह (मा.उपाध्यक्ष - मुंबई कांग्रेस), ब्रह्माकुमारी डॉ लाजवंती बहन (संचालिका ब्रह्माकुमारीज भांडुप), कांबले पुलिस अधिकारी मुलुंड, समाजसेवी लालजी , मीना बेन ठक्कर,दर्शना बेन राठौड़ (भाजपा नेता) उपस्थित रहे महोत्सव का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा ध्वज फहरा कर, दीप प्रज्वलित कर एवं शिवलिंग पर हार चढ़ा कर किया गया इस अवसर पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें जीवन में सुख, शांति, समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करने के उपाय सुझाये गये हैं मंच का संचालन ब्रह्मा कुमारी वर्षा बहन एवं सहयोग सविता बहन, उर्वशी बहन एवं पूजा बहन ने किया इस अवसर पर बड़ी संख्या में लोग उपस्थित रहे एवं महाप्रसाद ग्रहण किया आयोजन को सफल बनाने में देवेंद्र नारायण पटेल एवं संजय हीरानंदानी, दिलीप ठक्कर महाराज का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ

वानगांव और दहानू रोड स्टेशनों के बीच ब्लॉक के कारण कुछ ट्रेनें प्रभावित

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबई, मुंबई सेंट्रल मंडल के वानगांव और दहानू रोड स्टेशनों के बीच मोनोपोल की शिफ्टिंग/ डायवर्जन/ ऊंचाई बढ़ाने के लिए शनिवार एवं रविवार अर्थात 1 और 2 मार्च, 2025 को ब्लॉक लिया जाएगा। यह ब्लॉक एक घंटे के लिए अर्थात 01 मार्च, 2025 को 10.30 बजे से 11.30 बजे तक और 2 मार्च, 2025 को 09.50 बजे से 10.50 बजे तक अप एवं डाउन मेन लाइन पर होगा।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, 1 और 2 मार्च, 2025 को प्रभावित होने वाली ट्रेनों का विवरण इस प्रकार है:-

1 मार्च, 2025 को शॉर्ट टर्मिनेट/निरस्त होने वाली ट्रेनें:-

1. विरार से 09.30 बजे रवाना होने वाली ट्रेन संख्या 93013 विरार-दहानू रोड लोकल वानगांव में शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा इसलिए ट्रेन संख्या 93013 एवं 93014 वानगांव और दहानू रोड स्टेशनों के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।

2. चर्चगेट से 08.49 बजे रवाना होने वाली ट्रेन संख्या 93015 चर्चगेट-दहानू रोड लोकल वानगांव में शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा इसलिए ट्रेन संख्या 93015 एवं 93016 वानगांव और दहानू रोड स्टेशनों के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।

2 मार्च, 2025 को शॉर्ट टर्मिनेट/निरस्त होने वाली ट्रेनें:-

1. चर्चगेट से 07.42 बजे प्रस्थान करने वाली ट्रेन संख्या 93011 चर्चगेट-दहानू रोड लोकल वानगांव में शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा इसलिए ट्रेन संख्या 93011 एवं 93016 वानगांव और दहानू रोड स्टेशनों के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।

2. विरार से 09.30 बजे प्रस्थान करने वाली ट्रेन संख्या 93013 विरार-दहानू रोड लोकल बोईसर में शॉर्ट टर्मिनेट होगी तथा इसलिए ट्रेन संख्या 93013 एवं 93014 बोईसर और दहानू रोड स्टेशनों के बीच आंशिक रूप से निरस्त रहेगी।

1 मार्च, 2025 को रेगुलेट होने वाली ट्रेनें:-

1. ट्रेन संख्या 12990 अजमेर-दादर एक्सप्रेस 35 मिनट रेगुलेट होगी।

2. ट्रेन संख्या 12980 जयपुर-बांद्रा टर्मिनस एक्सप्रेस 25 मिनट रेगुलेट होगी।

2 मार्च, 2025 को रेगुलेट होने वाली ट्रेनें:-

1. ट्रेन संख्या 12934 अहमदाबाद-मुंबई सेंट्रल कर्णावती एक्सप्रेस 35 मिनट रेगुलेट होगी।

2. ट्रेन संख्या 09653 अजमेर-बांद्रा टर्मिनस स्पेशल 01 घंटा रेगुलेट होगी।

अकेली बुजुर्ग महिला से लूट

कान से कुंडल छीने, आरोपी ने दी जान से मारने की धमकी

नोएडा, ग्रेटर नोएडा के दनकौर कोतवाली क्षेत्र में एक बुजुर्ग महिला के साथ लूट का मामला सामने आया है। कनरसा गांव में रहने वाली 70 वर्षीय शीला के घर में मंगलवार रात एक दबंग ने प्रवेश किया। उस समय शीला अकेली थीं क्योंकि उनका परिवार बाहर गया हुआ था। आरोपी ने शीला के कानों से सोने के कुंडल जबरन छीन लिए। जब शीला ने शोर मचाया तो आरोपी ने उन्हें जान से मारने की धमकी दी। इसके बाद वह गहने लेकर फरार हो गया। पीड़िता ने सुबह होने पर पड़ोसियों को घटना की जानकारी दी।

पश्चिम रेलवे

अपग्रेडिंग और मरम्मत कार्य

उप मुख्य विद्युत अभियंता (डब्ल्यू), पश्चिम रेलवे कैरिएज मरम्मत वर्कशॉप, एन. एम. जोशी मार्ग, लोअर परेल, मुंबई – 400 013 द्वारा **ई-निविदा सूचना क्र. ईएल/डब्ल्यूए/पीएल/2024-25/53** आमंत्रित की जाती है. **कार्य का नाम** : कैरिएज मरम्मत वर्कशॉप, लोअर परेल में आरडीएसओ विनिर्देशन क्र. आरडीएसओ/पीई/एसपीईसी/एसी/0013-2011 (रि.-3) अथवा नवीनतम के अनुसार 25 केडब्ल्यू के दोषपूर्ण विविध मेक ईआरआरयूज् के अपग्रेडेशन के साथ मरम्मत / पुनर्स्थापन कार्य. **कार्य की अनुमानित लागत** : रु. 70,20,897/-. **ईएमडी** : रु. 1,40,400/-. निविदा जमा करने की **अंतिम तिथि एवं समय** : 18.03.2025 को 12.00 बजे तक, **निविदा का खुलना** : 18.03.2025 को 12.30 बजे. अधिक जानकारी के लिए कृपया हमारी वेबसाइट **www.ireps.gov.in** का अवलोकन करें. 1120

Like us on: facebook.com/WesternRly

पश्चिम रेलवे

पीवीसी स्ट्रिपिंग, बिछाना और वेल्डिंग कार्य

मुख्य वर्कशॉप प्रबंधक, कैरिएज मरम्मत वर्कशॉप, पश्चिम रेलवे, एन. एम. जोशी मार्ग, लोअर परेल, मुंबई 13 द्वारा **निविदा सूचना क्र. : डब्ल्यूआर-पीएल-एमई-ईएसटी-569622, दिनांक : 22.02.2025** आमंत्रित की जाती है. **स्थान के साथ कार्य का नाम** : लोअर परेल वर्कशॉप में पीओएच के दौरान कोचेस की फ्लोरिंग पर पीवीसी स्ट्रिपिंग, बिछाना और वेल्डिंग का कार्य. **मात्रा** : 1,30,000 वर्ग फीट – पुराने पीवीसी स्ट्रिपिंग, 3,90,000 – नई पीवीसी बिछाना और 80,000 आरएफटी थर्मल वेल्डिंग. **अनुमानित निविदा लागत** : रु. 43,83,700/-. **ईएमडी** : रु. 87,700/-. **ई-बोलियां ऑनलाइन जमा करने की अंतिम तिथि एवं समय** : 26.03.2025 को 14.00 बजे तथा **ई-निविदाओं का खुलना** : 26.03.2025 को 14.30 बजे. बोली प्रपत्र तथा अन्य विवरण जैसे कि शुद्धिपत्र आदि वेबसाइट **www.ireps.gov.in** से प्राप्त किए जा सकते हैं. 1114

Like us on: facebook.com/WesternRly

अभियान अप्रैल, 2024 से जनवरी, 2025 तक एसी लोकल में चेकिंग अभियान के दौरान 1.72 करोड़ रुपये का जुर्माना प्राप्त किया गया

एसी लोकल ट्रेनों में अनधिकृत यात्रा पर रोक के लिए पश्चिम रेलवे का टिकट चेकिंग अभियान

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबई, मुंबई उपनगरीय रेल दुनिया की सबसे व्यस्त रेलवे प्रणाली में अपनी तरह का एक रेल खंड है और यह प्रतिदिन लाखों यात्रियों को अपनी सेवाएँ प्रदान करता है, जिसे शहर की जीवन रेखा के रूप में भी जाना जाता है। पश्चिम रेलवे का मुंबई उपनगरीय नेटवर्क प्रतिदिन चलने वाली अपनी 1406 (109 एसी सहित) सेवाओं के माध्यम से लगभग 3 मिलियन यात्रियों को उनके गंतव्यों तक पहुँचाता है।पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार पश्चिम रेलवे प्रतिदिन 109 एसी लोकल सेवाएँ चलाती है, जिनमें प्रतिदिन लगभग 1.26 लाख यात्री सफर करते हैं। वित्तीय वर्ष 2024-25 (जनवरी 2025 तक) के दौरान मुंबई मंडल की टिकट चेकिंग टीमों ने एसी लोकल में अनियमित यात्रा के 51,600 से अधिक मामलों का पता लगाया और जुमार्ना लगाया तथा जुमार्ने के रूप में 1.72 करोड़ रुपये की राशि प्राप्त की।जनवरी-2025 के दौरान अनियमित यात्रा के 6,258 मामलों से 20.97 लाख रुपये की राशि वसूल की गई, जबकि जनवरी-2024 के दौरान 4,743 मामलों से 16.07 लाख रुपये की राशि वसूल की गई। यह जुमार्ने में लगभग 31% और पकड़े गए मामलों की संख्या में 32% की वृद्धि है।श्री विनीत ने आगे बताया कि वास्तविक यात्रियों के यात्रा अनुभव को बेहतर बनाने और एसी लोकल में अनियमित यात्रा को रोकने के लिए पश्चिम रेलवे के मुंबई डिवीजन ने कई पहल शुरू की हैं, जिसमें उपनगरीय ट्रेनों में एक समर्पित एसी टास्क फोर्स शामिल हैं, जो अनियमित यात्रा के मामलों की निगरानी करती है। नियमित अंतराल पर विशेष अभियान भी चलाए जाते हैं। व्यस्त समय के दौरान यात्री हेल्पलाइन नंबर 139/ व्हाट्सएप मैसेज नंबर 9004497364 पर 24 घंटे एसी लोकल ट्रेनों से संबंधित शिकायतें दर्ज करा सकते हैं, जिस पर तुरंत कार्रवाई की जाती है। एसी लोकल ट्रेनों में टिकट चेकिंग प्रदर्शन की भी दैनिक आधार पर निगरानी की जाती है। पश्चिम रेलवे अपने यात्रियों को अनियमित यात्रा रोकने तथा आरामदायक यात्रा अनुभव सुनिश्चित करने के लिए अथक प्रयास करने के लिए प्रतिबद्ध है। पश्चिम रेलवे अपने यात्रियों से अपील करती है कि वे असुविधा से बचने के लिए उचित एवं वैध रेलवे टिकट खरीदकर सम्मानपूर्वक यात्रा करें।

मुंबई के सीए से 1.64 करोड़ की धोखाधड़ी, जोधपुर के युवक ने कैसे लगाया करोड़ों का चूना?

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मुंबईः मुंबई में 59 साल के एक साहब भरत धनजी गाला जोधपुर के एक 25 साल के लड़के मोहम्मद अकरम अब्दुल सत्तार के जाल में फंस गए। अकरम ने उन्हें बड़े-बड़े कंपनियों में अकाउंटिंग के कॉन्ट्रैक्ट का लालच दिया और 1.64 करोड़ रुपये ठग लिए। यह सब जनवरी 2024 में शुरू हुआ जब अकरम, गाला के दादर ईस्ट वाले ऑफिस में आया। उसने खुद को कंपनी का सेक्रेटरी बताया और प्रफुल्ल पटेल और रवि जैन जैसे बड़े बिजनेसमैन से जान-पहचान होने का दावा किया। गाला को लगा कि बड़ा काम मिल जाएगा और वो झांसे में आ गए।कैसे किया फ्रॉडअकरम ने अपनी बातों को और पक्का करने के लिए आशीष अग्रवाल नाम के एक और आदमी का जिक्र किया। उसने बताया कि अग्रवाल जयपुर का बड़ा बिजनेसमैन है और उसे नई कंपनियों के लिए उअ की जरूरत है। ऋरळ फाइलिंग, टैक्स और रजिस्ट्रेशन का काम भी देगा। गाला को लगा मौका अच्छा है और उन्होंने अकरम के बताए बैंक अकाउंट में 1,64,56,944 रुपये ट्रांसफर कर दिए। उधार लेकर दे दिए करोड़ों रुपयेगाला ने यह पैसा जुटाने के लिए बैंकों से लोन लिया, क्रेडिट कार्ड का पूरा इस्तेमाल किया और रिश्तेदारों-दोस्तों से भी उधार लिया। अब उनके ऊपर कर्ज का बोझ बहुत बढ़ गया है। जब गाला ने पैसे वापस मांगने शुरू किए, तो अकरम ने 23 सितंबर 2024 से पैसे वापस करने का वादा किया। उसने 20 लाख के छह चेक और 45 लाख रुपये देने का लिखित में वादा किया, लेकिन कुछ नहीं मिला।पुलिस में दर्ज कराया केसजब गाला की पत्नी ने अकरम से बात की तो उसने बदतमीजी की और गाली-गलौज की।

पुराणिक बिल्डर के खिलाफ मुंह पर काली पट्टी बांधकर वरिष्ठ नागरिकों ने किया विरोध आंदोलन

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

ठाणे , वर्तक नगर की एकता को-ऑपरेटिव हाउसिंग सोसाइटी, बिल्डिंग नंबर 18 के वरिष्ठ नागरिकों ने पुराणिक बिल्डर्स के कार्यालय पर मुंह पर काली पट्टी बांधकर मौन जुलूस निकाला गया और विरोध जताया है। निवासियों के अनुसार, पुराणिक बिल्डर्स ने 40 सदस्यों का 9 करोड़ बकाया नहीं चुकाया है। घरों का कब्जा देने के बावजूद 27 महीनों से उक्त घरों की रजिस्ट्री नहीं की गई है। पंजीकृत समझौते के अनुसार कोई काम पूरा नहीं किया गया है। पिछले कुछ महीनों से निवासी लगातार विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। लेकिन बिल्डर पर इसका कोई असर नहीं है। एकता को ऑपरेटिव हाउसिंग सोसायटी के सदस्यों को न्याय दिलाने के लिए बताया गया कि पुराणिक बिल्डर्स के खिलाफ ठाणे कोर्ट में केस चल रहा है। जिसके कारण समस्या होने की बात सामने आई है।

अंबरनाथ का प्राचीन शिवमन्दिर बम-बम भोले और हर-हर महादेव से गूंजा, जगह-जगह भक्तों ने लगाए पंडाल

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

अंबरनाथ. बदलापुर, उल्हासनगर और अंबरनाथ के ग्रामीण और शहरी अंचल में बुधवार को महाशिवरात्रि का पर्व बड़े ही हर्षोल्लास और श्रद्धा विश्वास के साथ मनाया गया। अंबरनाथ के प्राचीन शिवमन्दिर के द्वार मंगलवार रात 12 बजे से भक्तों के लिए खोल दिए गए थे। दिन भर लाखों श्रद्धालुओं ने बम-बम भोले और हर-हर महादेव के जयकारों के साथ शिवमन्दिर की यात्रा में शामिल हुए और शिवजी के पवित्र दर्शन किए। राजनीतिक दलों, सामाजिक संगठनों, व्यापारिक प्रतिष्ठानों की तरफ से जगह जगह भक्तों की सेवा के लिए टेंट लगाए गए थे जहां उन्हें पानी और प्रसाद के रूप में लंगर की व्यवस्था की गई थी। शिवमन्दिर परिसर और शहर के मुख्य चौराहों पर पुलिस द्वारा कड़ा बंदोबस्त किया गया था। नपा प्रशासन की तरफ से

मंदिर के निकट सहायता कक्ष, योग्य डॉक्टरों की टीम, अग्निशमन दल की तैनाती भी की थी। महाशिवरात्रि पर भोले बाबा के दर्शन के लिए दिन भर भक्तों का तांता लगा रहा। क्या आम और क्या खास सभी लोगों में एक गजब का जोश देखा गया। अंबरनाथ के प्राचीन शिवमन्दिर के गर्भगृह में शहर

और आसपास के कई गणमान्य लोगों ने पूजा अर्चना की और शिव भगवान से आशीर्वाद प्राप्त किया। बदलापुर के राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के वरिष्ठ नेता और परशुराम आर्थिक विकास महामंडल के अध्यक्ष कैप्टन आशीष दामले ने शिव मंदिर परिसर के गर्भगृह में आकर संपूर्ण विधि-विधान से पूजा-अर्चना की। इसके अलावा भाजपा नेता सुजाता भोईर, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (शरद पवार) अंबरनाथ के शहर अध्यक्ष सदाशिव पाटिल, अंबरनाथ व्यापारी संघ भाजपा युवा मोर्चा महाराष्ट्र प्रदेश सचिव विनय वर्मा, युवा सेना अंबरनाथ तालुका प्रमुख शैलेश भोईर आदि ने भी पूजा अर्चना की और मंदिर परिसर में प्रसाद आदि का वितरण किया।

फास्ट ट्रैक

चुनार में गंगा में नहाने गईं चार किशोरियां

दो की डूबने से मौत, दो को मछुआरों ने बचाया, पक्के घाट की मांग

चुनार, कोतवाली क्षेत्र के जलालपुर माफी गंगा में नहाने गई चार किशोरियों में से दो की डूबने से मौत हो गई। जलालपुर माफी गांव की यह घटना सुबह 8 बजे की है। मृतक किशोरियों में 17 वर्षीय कुसुम कुमारी और 16 वर्षीय काजल शामिल हैं। स्थानीय मछुआरों ने दो अन्य किशोरियों -

16 वर्षीय गीता और 18 वर्षीय सीता को बचा लिया। गोताखोरों ने काफी प्रयास के बाद दोपहर 2 बजे दोनों मृतक किशोरियों के शव बरामद किए। मृतक काजल कक्षा 10 की छात्रा थी। उसके पिता मलेशिया में मजदूरी करते हैं। वह दो भाइयों की अकेली बहन थी। वहीं कुसुम चार बहनों में से एक थी और उसके दो भाई हैं। उसके पिता खेती-बाड़ी से परिवार का भरण-पोषण करते हैं। काजल के भाई अजय ने कहा कि अगर घाट पक्का होता तो यह दुर्घटना नहीं होती। किशोरियां बालू वाले क्षेत्र में नहाने नहीं जातीं। घटना की सूचना मिलते ही उप जिलाधिकारी राजेश कुमार वर्मा, तहसीलदार योगेंद्र शरण शाह, कानूनगो रामप्यारे, लेखपाल शेषमणि और चुनार कोतवाल रविंद्र भूषण मौर्य पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। पुलिस ने दोनों शवों को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है।

पटना के तस्कर से 219 लीटर अवैध अंग्रेजी शराब बरामद

फर्जी नंबर प्लेट वाली कार जब्त, हरियाणा से शराब लेकर बिहार जा रहा था

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

बलिया, बलिया में पुलिस ने होली से पहले बड़ी कार्रवाई करते हुए शराब तस्करी के प्रयास को नाकाम कर दिया। एसओजी और कोतवाली पुलिस की संयुक्त टीम ने मुखबिर की सूचना पर माल्देपुर मोड से एक तस्कर को गिरफ्तार किया है। पकड़े गए आरोपी की पहचान पटना के कंकड़बाग निवासी सनी कुमार के रूप में हुई है। आरोपी हरियाणा से शराब लेकर बिहार ले जा रहा था। उसकी ब्रेजा कार माल्देपुर मोड के पास खराब हो गई थी। पुलिस को देखते ही आरोपी भागने का प्रयास कर रहा था, लेकिन टीम ने उसे मौके पर ही पकड़ लिया। जांच में पता चला कि आरोपी होली के मौके पर ऊंचे दाम पर शराब बेचकर मुनाफा कमाना चाहता था। कार की तलाशी में विभिन्न ब्रांड की कुल 292 बोतल अंग्रेजी शराब बरामद हुई। इनमें रेड

लेबल की 78, ब्लैंडर की 70, सिग्नेचर की 8, रॉयल स्टैग की 65, वैलेंटाइन की 37, ब्लैक एंड व्हाइट की 20, 100 पाइपर की 8 और ब्लैक डॉग की 6 बोतलें शामिल हैं। सभी बोतलें 750 एमएल की हैं। पुलिस ने कार को भी जब्त कर लिया है। जांच में कार की नंबर प्लेट फर्जी पाई गई है। पुलिस टीम में निरीक्षक विश्वनाथ यादव, उपनिरीक्षक हितेश कुमार और उपनिरीक्षक गिरीजेश सिंह शामिल थे।

गंगा स्नान करने गई बच्ची डूबी

गोताखोर कर रहे तलाश, गहरे पानी में जाने की वजह से हुआ हादसा

रायबरेली, गदागंज में एक हादसा सामने आया। नवादा पट्टी निवासी राजभान की 13 वर्षीय बेटी प्रिया गंगा स्नान के दौरान डूब गई। प्रिया अपनी मां अनुसूया के साथ धीरनपुर स्थित परशुराम शिव मंदिर के गंगा घाट पर स्नान करने गई थी। स्नान के दौरान प्रिया अचानक गहरे पानी में चली गई। मां की चीख-पुकार पर आसपास के लोग मदद के लिए दौड़े। स्थानीय लोगों ने बचाने का प्रयास किया, लेकिन प्रिया का कहीं पता नहीं चल सका। घटना की सूचना मिलते ही डलमऊ और गदागंज पुलिस मौके पर पहुंची। गोताखोरों की मदद से किशोरी की तलाश जारी है। थाना प्रभारी गदागंज बालेंदु गौतम के अनुसार, यह घटना गदागंज और डलमऊ थाना क्षेत्र की सीमा पर हुई है। दोनों थाना क्षेत्र की पुलिस मिलकर तलाश में जुटी है।

रायबरेली में गेहूं की फसल पर मंडराया संकट

- सलेथू रजबहा में नहीं आ रहा पानी, किसान ट्यूबवेल से कर रहे महंगी सिंचाई

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

रायबरेली, बछरावा और महराजगंज तहसील क्षेत्र में गेहूं की सिंचाई किसानों के लिए बड़ी चुनौती बन गई है। सलेथू रजबहा नहर में पानी नहीं होने से दो दर्जन से अधिक गांवों के किसान परेशान हैं। किसानों को मजबूरन पंपसेट का सहारा लेना पड़ रहा है। इससे उन्हें प्रति घंटा 200 रुपये का अतिरिक्त खर्च उठाना पड़ रहा है। सलेथू रजबहा से कई माइनर कटी हुई हैं, लेकिन पानी नहीं पहुंच रहा है। प्रभावित गांवों में सलेथू, पांडे का पुरवा, झलिहा, अहमदगंज, इंदौरा, भदिहा, तिवारी का पुरवा, गोलहा, जिहवा, रवना गढ़ी, महापतगंज, बिस्तारी और पूरे शिवदीन शामिल हैं। इन सभी गांवों में पानी का गंभीर संकट बना हुआ है। किसान सूर्य बक्स सिंह, विजय राज, सूरज, विनय, राकेश और राम प्रकाश सहित कई किसानों का कहना है कि गेहूं की फसल को सिंचाई की अत्यधिक आवश्यकता है। उन्होंने शासन-प्रशासन से मांग की है कि जल्द से जल्द नहर में पानी छोड़ा जाए। किसानों का कहना है कि समय पर सिंचाई न होने से फसल चौपट हो सकती है और उनकी सारी मेहनत बेकार हो जाएगी।

ईंट लदे ट्रैक्टर से टकराए बाइक सवार

बोरबेल ट्रक की चपेट में आने से दो की मौत, एक गंभीर, एक चालक फरार, दूसरा गिरफ्तार

मडिहान, लालगंज-कलवारी मार्ग पर एक सड़क दुर्घटना में दो युवकों की मौत हो गई। गोपलपुर गांव के पास हुई इस दुर्घटना में एक अन्य युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। एक ही बाइक पर सवार तीनों युवक कलवारी से दीपनगर की तरफ जा रही ईंट लदी ट्रैक्टर ट्राली से टकरा गए। टक्कर के बाद तीनों सड़क पर गिर पड़े। इसी दौरान लालगंज से

कलवारी की तरफ जा रहे बोरबेल ट्रक की चपेट में आ गए। दुर्घटना में महेश (25 वर्ष) और गौरव उर्फ रोहित (30 वर्ष) की मौके पर ही मौत हो गई। घायल सूरज (25 वर्ष) को पहले सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मड़िहान ले जाया गया। उसकी गंभीर स्थिति को देखते हुए ट्रामा सेंटर वाराणसी रेफर कर दिया गया। ट्रैक्टर चालक मौके से फरार हो गया। ग्रामीणों ने ट्रक और उसके चालक को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। थाना प्रभारी प्रदीप कुमार सिंह ने बताया कि तहरीर मिलने पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। दुर्घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। मृतकों के परिजन भी मौके पर पहुंचे।

किशोरी को भगाने और धर्मांतरण का मामला

- मिर्जापुर में आरोपी महिला गिरफ्तार, नाबालिग को पुलिस ने पहले ही पकड़ा था

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मिर्जापुर, मिर्जापुर में एक किशोरी को बहला-फुसलाकर भगाने और धर्मांतरण के लिए दबाव बनाने के मामले में पुलिस ने मंगलवार को मुख्य आरोपी महिला को गिरफ्तार किया है। शहर कोतवाली थाने में 6 फरवरी को पीड़िता के भाई ने शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया कि उनकी नाबालिग बहन को बहला-फुसलाकर भगा ले गए और उस पर धर्म परिवर्तन का दबाव बनाया जा रहा था। थाना प्रभारी नीरज पाठक को मुखबिर से सूचना मिली। इसके बाद उप-निरीक्षक अजय कुमार ओझा और महिला कांस्टेबल पारूल श्रीवास्तव की टीम ने तरकापुर की रहने वाली शकिला बेगम को गिरफ्तार कर लिया। शकिला स्वर्गीय याहिया की पत्नी है। पुलिस ने इस मामले में शामिल एक नाबालिग आरोपी को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। पीड़िता को भी बरामद कर उसके

परिवार को सौंप दिया गया है। जांच में पता चला कि आरोपियों ने किशोरी को कैद कर रखा था। वे उस पर विवाह और धर्म परिवर्तन का दबाव बना रहे थे।

4 शातिर अपराधियों पर गैंगस्टर एक्ट

- वाहन चोरी और लूट के आरोपी फरार, पुलिस कर रही तलाश

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मडिहान, थाना पुलिस ने क्षेत्र में सक्रिय चार शातिर अपराधियों के खिलाफ गैंगस्टर एक्ट के तहत कार्रवाई की है। गैंग के सरगना गोलू उर्फ शशांक मिश्रा समेत अरुण कुमार, संदीप और कमलेश इस समय फरार हैं। इन अपराधियों पर गैंग बनाकर वाहन चोरी और लूट जैसी वारदातों को अंजाम देने का आरोप है। इनकी गतिविधियों से क्षेत्र में दहशत का माहौल है। जिलाधिकारी के अनुमोदन के बाद थाना पुलिस ने इन सभी के विरुद्ध गैंगस्टर एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया है। थानाध्यक्ष प्रदीप सिंह के अनुसार, इससे पहले 30 मई 2023 को इन अपराधियों को दो

मोटरसाइकिल और तमंचे के साथ गिरफ्तार कर जेल भेजा गया था। वाहन चोरी के मामले में मुकदमा दर्ज किया गया था। अब पुलिस फरार चारों आरोपियों की सरगर्मी से तलाश कर रही है।

सिंचाई संसाधनों के बावजूद किसानों की समस्या बरकरार

- मड़िहान में सिरसी पंप नहर में पानी कम, घाघर नहर में हो रहा बर्बाद

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

मडिहान, तहसील क्षेत्र में किसानों की स्थिति चिंताजनक है। यहां सिंचाई के लिए विशाल नहर नेटवर्क होने के बावजूद रबी की फसलें सूख रही हैं। सिरसी बांध से निकली पंप कैनाल का पानी टेल तक नहीं पहुंच पा रहा है। क्षेत्र के किसान हौसिला प्रसाद, सोनू और रामधरन समेत कई किसानों ने बताया कि नहर में पानी की कमी से गेहूं की फसल प्रभावित हो रही है। उन्होंने जिलाधिकारी से सिरसी लिफ्ट के पंप को पूरी क्षमता से चलाने की मांग की है। दूसरी तरफ, मुख्य घाघर नहर में अनावश्यक रूप से पानी छोड़ा जा रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि इस पानी को गर्मी के लिए संरक्षित किया जा सकता था। इससे भूजल स्तर बना रहता और पेयजल की समस्या भी नहीं होती। मड़िहान तहसील में

19 हजार हेक्टेयर सिंचित और 17 हजार हेक्टेयर असिंचित भूमि है। यहां धंधरौल डैम, सिरसी डैम, अपर खजूरी, सोन पंप, सिरसी लिफ्ट कैनाल, गुरुदेव नगर पंप कैनाल, मुक्खा पंप कैनाल और धोवा पंप जैसी सिंचाई सुविधाएं हैं। निजी नलकूप भी हैं। फिर भी किसान सूखे से जूझ रहे हैं। इस स्थिति में किसान कर्ज के जाल में फंसते जा रहे हैं। मजदूर बहुल क्षेत्रों में भी किसानों को मशीनरी का सहारा लेना पड़ रहा है। विभागीय अधिकारी इस समस्या पर मौन हैं।

अंग्रेजी न बोल पाने पर पत्नी से मारपीट :दहेज में एक करोड़ की मांग

- 13 साल पहले हुई थी शादी, केस दर्ज

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

शाहजहांपुर, एक महिला ने अपने पति पर दहेज उत्पीड़न का मामला दर्ज कराया है। महिला का आरोप है कि पति आईटी कंपनी खोलने के नाम पर एक करोड़ रुपये की मांग कर रहा है। अल्हागंज थाना क्षेत्र की रहने वाली महिला की शादी 13 साल पहले फरुर्खाबाद निवासी निशांक गुप्ता से हुई थी। शादी में मायके पक्ष ने 50 लाख रुपये खर्च किए। साथ ही 15 तोला सोना पीड़िता को और 10 तोला सोना पति पक्ष को दिया गया। पीड़िता के अनुसार, पति शादी के समय चंडीगढ़ की एक आईटी कंपनी में काम करता था। बाद में वह दुबई चला गया। पति अंग्रेजी न बोल पाने के कारण पत्नी को

प्रताड़ित करता था। पीड़िता ने एक बेटी को जन्म दिया, जिसका सारा खर्च मायके पक्ष ने उठाया। पति परिवार के साथ घर आया और एक करोड़ रुपये की मांग की। मांग पूरी न होने पर अंजाम भुगतने और दूसरी शादी करने की धमकी दी। दुबई से लौटने के बाद पति ने नोएडा में मकान बनवाया, लेकिन पत्नी और बेटी की कोई फिक्र नहीं की। पति ने गौतमबुद्धनगर न्यायालय में तलाक का मुकदमा दायर कर दिया है। इसके बाद पीड़िता ने अल्हागंज थाने में एफआईआर दर्ज कराई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

होली से पहले शाहजहांपुर में हुई बड़ी कार्रवाई

25 हजार का इनामी शराब तस्कर गिरफ्तार, जेल भेजा गया

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

शाहजहांपुर, पुलिस ने एक बड़ी कामयाबी हासिल की है। रोजा थाना पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर दियूरिया मोड़ से 25 हजार रुपए के इनामी शराब तस्कर को गिरफ्तार किया है। आरोपी अमरपाल थाना रोजा क्षेत्र के शाहगंज का रहने वाला है। पिछले साल पुलिस ने अवैध शराब बनाने वालों के खिलाफ अभियान चलाया था। इस दौरान एक आरोपी को जेल भेजा गया था। अमरपाल उस समय फरार हो गया था। पुलिस को आरोपी का कोई सुराग नहीं मिल रहा था। एसपी के निर्देश पर उस पर 25 हजार रुपए का इनाम घोषित किया गया। पुलिस ने एक विशेष टीम का गठन कर उसकी तलाश तेज कर दी थी।

लुटेरी महिला समेत पांच गिरफ्तार

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

शाहजहांपुर, पुलिस ने एक महिला समेत पांच लुटेरों को गिरफ्तार किया है। सभी आरोपी हरदोई के रहने वाले हैं। पुलिस ने इनके पास से लूटे गए 58 हजार रुपए, मोबाइल, तमंचा और दो बाइक बरामद की हैं। गैंग का तरीका बेहद शातिर था। आरोपी महिला बैंक में बैठकर उन लोगों की पहचान करती थी जो ज्यादा रुपए निकालते थे। वह अपने साथियों को लोकेशन भेज देती थी। फिर सुनसान जगह पर लूट की वारदात को अंजाम दिया जाता था। थाना सेहरामऊ दक्षिणी क्षेत्र में बैंक से पैसे निकालकर जा रहे एक युवक से बाइक सवारों ने 55 हजार रुपये लूट लिए। इसके बाद एक ई-रिक्शा चालक से मोबाइल और तीन हजार रुपये छीन लिए।

भारत संवाद परिवार

1-संरक्षक-भारत संवाद
डॉ राम किशोर शर्मा
पूर्व विभागाध्यक्ष इलाहाबाद विश्व विद्यालय कबीर सम्मान 2021 से सम्मानित,
2-संरक्षक-भारत संवाद
आचार्य पं0 पृथ्वीनाथ पाण्डेय
भाषाविज्ञानी एंव मीडियाध्ययन विशेषज्ञ
3-संरक्षक-भारत संवाद
गजानन महतपुरकर
(सुपरिचित कवि, लेखक, गीतकार, मंच संचालक, स्वतंत्र पत्रकार एवं सदस्य, महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादमी तथा पश्चिम रेलवे, चर्चगेट के वरिष्ठ जनसम्पर्क अधिकारी पद से सेवानिवृत्त)
4-कला एवं मनोरंजन संपादक
(भारत संवाद)
जगन्नाथ तिवारी
5-उपसंपादक (भारत संवाद)
माता प्रसाद शर्मा
6-प्रभारी प्रयागराज संस्करण
(भारत संवाद)
आशीष कुमार शर्मा

अमेरिका को हथियार-बैटरी बनाने वाले खनिज देगा यूक्रेन

जंग में मिली मदद के बदले डील करेंगे जेलेंस्की; ट्रम्प ने फंडिंग रोकने की धमकी दी थी

एजेंसी

वॉशिंगटन/कीव, यूक्रेन, अमेरिका को रेयर अर्थ मटेरियल (दुर्लभ खनिज) देने पर राजी हो गया है। यूक्रेन और अमेरिका दोनों देशों के अधिकारियों ने मंगलवार को इसकी घोषणा की। वहीं, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने दावा किया है कि जेलेंस्की इस डील पर साइन करने के लिए शुक्रवार को अमेरिका का दौरा कर सकते हैं। ट्रम्प करीब 1 महीने से यूक्रेन सरकार पर अमेरिका को दुर्लभ खनिज देने को लेकर दबाव बना रहे थे। उनका कहना था कि यदि यूक्रेन को अमेरिकी मदद चाहिए तो उसे 500 बिलियन डॉलर के दुर्लभ खनिज अमेरिका को देने होंगे। उन्होंने जेलेंस्की को धमकी दी थी कि यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया तो अमेरिका यूक्रेन को और मदद देना बंद कर देगा। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक यूक्रेन के साथ नई खनिज डील में अमेरिका ने 500 बिलियन डॉलर के खनिज की

मांग छोड़ दी है। हालांकि, उसने यूक्रेन की सुरक्षा गारंटी देने से भी इनकार कर दिया है। अमेरिकी अधिकारी इसका विरोध कर रहे थे। यूक्रेन डील के बदले में अमेरिका से सुरक्षा गारंटी की मांग कर रहा था। सीएनएन की रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिका दुर्लभ खनिज के बदले यूक्रेन के री-डेवलपमेंट (पुनर्विकास) में मदद करेगा। दुर्लभ खनिजों की ग्लोबल सप्लाई चेन में फिलहाल चीन सबसे बड़ा प्लेयर है। माइनिंग टेक्नोलॉजी की रिपोर्ट के मुताबिक चीन दुनिया के 69% दुर्लभ खनिजों का उत्पादन करता है, जबकि 90% दुर्लभ खनिज चीन में ही प्रोसेस होते हैं। बीबीसी की रिपोर्ट के मुताबिक ट्रम्प दुर्लभ खनिजों की सप्लाई में अमेरिका का हिस्सा बढ़ाना चाहते हैं। फिलहाल अमेरिका इन खनिजों के लिए चीन पर निर्भर है। अमेरिका को दोबारा महान बनाने की बात करने वाले ट्रम्प के लिए ये चिंता की बात है। इससे अमेरिका का आर्थिक और सैन्य मोर्चे पर दांव कमजोर पड़ सकता है। यूक्रेन के लुहांस्क, डोनेत्सक, जपोरेजिया और खेरसॉन पर रूस ने कब्जा कर लिया है। इन प्रांतों में यूक्रेन के कुल खनिज भंडार का 53% हिस्सा है, जिसकी कीमत 6 ट्रिलियन पाउंड यानी 660 लाख करोड़ रुपए हैं। इस पर पुतिन का सितंबर 2022 से कब्जा है। यूक्रेन के पास रेयर अर्थ मटेरियल के दुनिया के कुल कच्चे माल का लगभग 5% है। इसमें ग्रेफाइट का लगभग 19 मिलियन टन भंडार शामिल हैं। इसके अलावा यूरोप के कुल लीथियम भंडार का 33% हिस्सा यूक्रेन के पास है। जंग की शुरूआत से पहले ग्लोबल टाइटेनियम उत्पादन में 7% हिस्सा यूक्रेन का था। यूक्रेन के पास रेयर अर्थ मटेरियल के कई अहम भंडार हैं। हालांकि, जंग के बाद इनमें से कई रूस के कब्जे में पहुंच गए हैं। यूक्रेनी मंत्री यूलिया स्विरीडेन्को के मुताबिक रूस के कब्जे वाले यूक्रेनी हिस्से में 350 अरब डॉलर के संसाधन मौजूद हैं। रेयर अर्थ मटेरियल 17 एलिमेंट्स का एक ग्रुप है, जो कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स से लेकर मिलिट्री इक्विपमेंट तक में इस्तेमाल होता है। इसका उपयोग आईटी इंडस्ट्रीज, सौर ऊर्जा, केमिकल इंडस्ट्रीज के अलावा आधुनिक तकनीकी ऑयल रिफाइनरी में और कई अन्य इंडस्ट्रीज में होता है।

सैलरी नहीं मिलने पर ओमान से नाव लेकर भागे भारतीय

जीपीएस की मदद से 3000केएम का समुद्री सफर तय किया, तीनों को कोस्ट गार्ड ने पकड़ा

एजेंसी

मस्कट, ओमान में काम कर रहे तीन भारतीय सैलरी न मिलने से परेशान होकर भारत के लिए भाग निकले। देश वापस लौटने के लिए उन्होंने समुद्र का रास्ता चुना और एक नाव चुरा ली। उन्होंने नाव के जरिए 3000 किमी का सफर भी तय कर लिया था, लेकिन 6 दिन बाद भारतीय कोस्टगार्ड ने उन्हें कर्नाटक के उडुपी तट के पास पकड़ लिया गया। तीनों को सोमवार को उडुपी की अदालत में पेश किया गया था और जहां से उन्हें न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। इस घटना की जानकारी अब सामने आई है। जेम्स फ्रैंकलिन मोसेस (50), रॉबिनस्टन (50)

और डेरोज अल्फांसो (38) तमिलनाडु के रहने वाले हैं। तीनों ओमान में एक मछली पकड़ने वाली कंपनी में काम कर रहे थे। यहां उन्हें समय पर सैलरी नहीं मिल रही थी और उन्हें परेशान किया जा रहा था। ऐसे में तीनों ने घर वापस लौटने का मन बनाया। लेकिन, ओमान की कंपनी ने इन लोगों का पासपोर्ट जब्त कर लिया था, इसलिए इनके पास घर लौटने के लिए समुद्र के रास्ते आने के अलावा कोई जरिया नहीं था। तीनों एक मछली पकड़ने वाली नाव लेकर भाग निकले। तीनों 17 फरवरी को दोपहर 3 बजे ओमान के पूर्वी हिस्से में दुकम बंदरगाह से निकले। 6 दिन का सफर तय कर 23 फरवरी को उडुपी के सेंट मैरी आईलैंड के पास नाव से भारतीय जलक्षेत्र में दाखिल हुए। ओमान की नाव देखकर एक लोकल मछुआरे ने इस बारे में तटीय सुरक्षा पुलिस को जानकारी दी। जानकारी मिलते ही भारतीय तटरक्षक और तटीय सुरक्षा पुलिस ने शाम करीब 4.30 बजे सेंट मैरी आईलैंड के पास से तीनों को पकड़ लिया।

सभी पर पासपोर्ट एक्ट 1920 की धारा 3 और भारतीय समुद्री क्षेत्र एक्ट 1981 की धारा 10, 11 और 12 के तहत मामला दर्ज किया गया। पूछताछ में सामने आया कि ये लोग सिर्फ एक जीपीएस डिवाइस की मदद से लगभग 3000 किलोमीटर का समुद्री सफर तय करके करवार तट के रास्ते सेंट मैरी द्वीप पहुंचे थे। तटीय सुरक्षा पुलिस के एसपी मिथुन एच.एन ने इस मामले में किसी भी आतंकी एंगल से इनकार किया है।

ट्रम्प को चेतावनी- रूस से जल्दबाजी में समझौता न करें

फ्रांसीसी राष्ट्रपति बोले- रूस ने हर बार युद्धविराम तोड़ा, मुद्दा भरोसे का है

एजेंसी

वॉशिंगटन, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैन्युल मैक्रों ने मंगलवार को अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प को चेतावनी दी है कि यूक्रेन युद्ध को लेकर रूस से जल्दबाजी में समझौता न करें। मैक्रों ट्रम्प से मिलने अमेरिका पहुंचे थे, मुलाकात के बाद उन्होंने फॉक्स न्यूज को दिए इंटरव्यू में इस बारे में बात की। मैक्रों ने बताया कि कुछ ही हफ्ते में रूस और यूक्रेन में युद्धविराम समझौता होने की पूरी संभावना है। फ्रांसीसी राष्ट्रपति यूरोपीय देशों के प्रतिनिधि के तौर पर ट्रम्प से मिले थे, क्योंकि यूरोप के करीब सभी देश अपनी सुरक्षा को लेकर एक जैसी चिंता रखते हैं। मैक्रों ने कहा- हमने 2014 में रूस के साथ शांति समझौता किया था। मैं आपको व्यक्तिगत अनुभव से बता सकता हूं, क्योंकि मैं उस शांति समझौते पर नजर रखने वाले दो सदस्यों में से एक था। रूस ने हर बार समझौते का उल्लंघन किया और हमने एकजुट होकर जवाब नहीं दिया। इसलिए मुद्दा भरोसे का है। सबसे पहले रूस और अमेरिका में बातचीत होना चाहिए। मैक्रों ने कहा मेरे हिसाब से युद्धविराम समझौते का क्रम इस तरह से होना चाहिए कि सबसे पहले अमेरिका और रूस के बीच बातचीत होनी चाहिए और फिर अमेरिका और यूक्रेन के बीच। राष्ट्रपति ट्रम्प ने मंगलवार घोषणा की है कि वो यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की के साथ बैठक के लिए तैयार हैं, यह बहुत जरूरी बात है। उन्होंने कहा- आने वाले हफ्तों में युद्धविराम हो सकता है। रूस को इसका सम्मान करना चाहिए। अगर ऐसा नहीं होता है तो यह साफ हो जाएगा कि पुतिन शांति समझौते और यूक्रेन की संप्रभुता के बारे में गंभीर नहीं है। राष्ट्रपति मैक्रों ने कहा- जब युद्धविराम लागू होगा तब हम यूक्रेन की सुरक्षा गारंटी और रूस के कब्जे से यूक्रेनी जमीन वापस लेने के मुद्दे पर बात करेंगे। यह यूक्रेन के राष्ट्रपति की जिम्मेदारी होगी कि वो अपने देश के हितों की रक्षा करें। उन्होंने कहा कि अमेरिका और यूक्रेन में यूक्रेनी खनिज को लेकर कोई समझौता होता है तो इससे फ्रांस और बाकी यूरोप को कोई दिक्कत नहीं है। फ्रांसीसी राष्ट्रपति ने कहा कि यूक्रेन के नाटो में शामिल करने को लेकर कोई आम सहमति नहीं है, लेकिन अगर हम (यूरोपीय नाटो सदस्य) यूक्रेन को अकेला छोड़ देते हैं, जैसा कि हमने पहले भी किया था तो रूस की तरफ से एक और हमले का खतरा है। यूक्रेन में फ्रांस और ब्रिटेन की संयुक्त सेना भेजने का प्रस्ताव मैक्रों ने कहा कि हमें यह देखना होगा कि शांति समझौते पर आगे बढ़ने के लिए किस तरह की सुरक्षा गारंटी की जरूरत है। एक ऑप्शन यह हो सकता है यूक्रेन की सैन्य क्षमता को मजबूत किया जाए ताकि वो रूसी मोर्चे पर एक मजबूत सेना बनाए रख सके। दूसरा तरीका यह हो सकता है कि फ्रांस और ब्रिटेन मिलकर एक प्रस्ताव पर काम करें कि वो यूक्रेन में ज्वाइंट सेना भेजेंगे। यह सेना उस इलाके में तैनात की जाएगी जहां रूस और यूक्रेन में सहमति होगी। इसका मकसद सिर्फ यह होगा की रूस की विश्वसनीयता पर नजर रखी जा सके। यह सब अमेरिका की सहमति के साथ होगा।

अमेरिकी नागरिकता देने के लिए 5 गुना वसूलेंगे ट्रम्प

44 करोड़ में सिटिजनशिप देंगे, 2 हफ्ते में शुरू होगा गोल्ड कार्ड वीजा प्रोग्राम

एजेंसी

वॉशिंगटन डीसी, राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प अमेरिका की नागरिकता देने के बदले 5 गुना ज्यादा पैसा वसूल करने वाले हैं। ट्रम्प ने मंगलवार को गोल्ड कार्ड नाम से एक नए वीजा प्रोग्राम को शुरू करने का ऐलान किया। इसे 5 मिलियन डॉलर (44 करोड़ भारतीय रुपए) में खरीदा जा सकता है। ट्रम्प ने इसे अमेरिकी नागरिकता का रास्ता बताया है। ट्रम्प ने गोल्ड कार्ड को ईबी-5 वीजा प्रोग्राम का विकल्प बताया और कहा कि भविष्य

में 10 लाख गोल्ड कार्ड बेचे जाएंगे। फिलहाल अमेरिकी नागरिकता के लिए ईबी-5 वीजा प्रोग्राम सबसे आसान रास्ता है। इसके लिए लोगों को 1 मिलियन डॉलर (करीब 8.75 करोड़ रुपए) देने होते हैं। ट्रम्प ने कहा कि यह वीजा कार्ड अमेरिकी नागरिकता के रास्ते खोलेगा। इसे खरीदकर लोग अमेरिका आएंगे और यहां बहुत ज्यादा टैक्स भरेंगे। उन्होंने दावा किया कि यह प्रोग्राम बहुत सफल होगा और इससे राष्ट्रीय कर्ज का भुगतान जल्द हो सकता है। ट्रम्प ने मंगलवार को वीजा प्रोग्राम से जुड़े एक्जीक्यूटिव ऑर्डर पर दस्तखत करते हुए कहा कि गोल्ड वीजा कार्ड नागरिकों को ग्रीन कार्ड जैसा स्पेशल राइट देगा। उन्होंने कहा कि इस प्रोग्राम के 2 हफ्ते में शुरू होने की उम्मीद है। ट्रम्प ने यह भी कहा कि नई योजना के बारे में विस्तार से जानकारी जल्द ही दी आएगी। इस दौरान उनके साथ कॉमर्शियल सेक्रेटरी हॉवर्ड लुटनिक भी मौजूद थे। उन्होंने कहा कि नए वीजा प्रोग्राम से देश में निवेश बढ़ेगा, इसके साथ ही ईबी-5 से जुड़ी धोखाधड़ी रुकेगी और नौकरशाही पर लगाम लगेगी। अमेरिका में स्थायी तौर पर रहने के लिए ग्रीन कार्ड की जरूरत होती है। इसके लिए ईबी-1, ईबी-2, ईबी-3, ईबी-4 वीजा प्रोग्राम हैं, लेकिन ईबी-5 वीजा प्रोग्राम सबसे ज्यादा बेहतर है। यह 1990 से लागू है। इसमें शख्स किसी रोजगार देने वाले नियोक्ता से नहीं बंधे होते हैं और अमेरिका में कहीं भी रहकर काम या फिर पढ़ाई कर सकते हैं।

भ्रष्टाचार को लेकर डीएमके पर बरसे अमित शाह, कहा- 2026 में तमिलनाडु में बनेगी एनडीए सरकार

एजेंसी

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने बुधवार को तमिलनाडु में सत्तारूढ़ द्रमुक सरकार पर तीखा हमला बोला और उसके नेताओं पर भ्रष्टाचार और कुशासन का आरोप लगाया। कोयंबटूर, तिरुवन्नामलाई और रामनाथपुरम में भाजपा जिला कार्यालयों के उद्घाटन के अवसर पर बोलते हुए, शाह ने कहा कि भ्रष्टाचार के मामलों में, ऊटड के सभी नेताओं के पास मास्टर डिग्री है। उनका एक नेता नौकरी के लिए नकद मामले में उलझा हुआ है, दूसरा मनी लॉन्ड्रिंग और अवैध रेत खनन में शामिल है, और तीसरा आय से अधिक संपत्ति से संबंधित आरोपों का सामना कर रहा है।शाह ने अपने संबोधन की शुरूआत में कहा कि मैं कोयंबटूर के सभी नागरिकों, तमिलनाडु के सभी नागरिकों को और देशभर के शिव भक्तों को शिवरात्रि की बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं। आज हमने कोयंबटूर, तिरुवन्नामलाई और रामनाथपुरम में कार्यालयों का उद्घाटन किया। बाकी सभी राजनीतिक दलों के लिए कार्यालय सिर्फ एक ऑफिस होता है, जबकि हम सब के लिए कार्यालय एक मंदिर होता है, जहां से हम पार्टी का संचालन करते हैं। उन्होंने कहा कि हाल ही में, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने केंद्रीय बजट पेश किया। बजट में मध्यम वर्ग और

शाह ने अपने संबोधन की शुरूआत में कहा कि मैं कोयंबटूर के सभी नागरिकों, तमिलनाडु के सभी नागरिकों को और देशभर के शिव भक्तों को शिवरात्रि की बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं।

किसानों को समर्थन देने के साथ-साथ एमएसएमई व्यवसायों के विकास और विस्तार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कई कल्याणकारी योजनाएं पेश की गईं। अमित शाह ने दावा किया कि साल 2024 बीजेपी के लिए ऐतिहासिक रहा है। 2024 में हमारे प्रिय नेता पीएम मोदी ने लगातार तीसरी बार पीएम पद की शपथ ली। 2024 में हमने पहली बार ओडिशा में पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनाई। लंबे समय बाद आंध्र प्रदेश में भी एनडीए सरकार बनी। हरियाणा, महाराष्ट्र और दिल्ली में हमारी चुनावी जीत ने साबित कर दिया है कि देश की जनता भाजपा पर भरोसा करती है। उन्होंने अपील कपरते हुए कहा कि तमिलनाडु में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) सरकार के गठन के लिए तैयार हो जाइए। 2026 में हम एनडीए प्रशासन स्थापित करेंगे। उन्होंने कहा कि यह नई सरकार तमिलनाडु के लिए एक नए युग की शुरूआत करेगी। हम राज्य में भाई-भतीजावाद को खत्म कर देंगे। तमिलनाडु में भ्रष्टाचार मिटाया जाएगा।

'दोषी सांसदों पर आजीवन प्रतिबंध लगाना सही नहीं केंद्र सरकार का सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा

अधिवक्ता अश्विनी कुमार उपाध्याय ने शीर्ष अदालत में याचिका दायर कर दोषी करार दिये गए राजनीतिक नेताओं पर आजीवन प्रतिबंध लगाने के अलावा देश में सांसदों और विधायकों के खिलाफ आपराधिक मामलों के त्वरित निस्तारण का अनुरोध किया है।

एजेंसी

केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में एक हलफनामा दायर कर उस जनहित याचिका का विरोध किया है, जिसमें दोषी ठहराए गए राजनेताओं के चुनाव लड़ने पर आजीवन प्रतिबंध लगाने की मांग की गई है। सरकार ने कहा कि अयोग्यता की अवधि विधायी नीति के दायरे में आती है। यह दावा 2016 में वकील अश्विनी उपाध्याय द्वारा दायर एक याचिका के जवाब में प्रस्तुत एक हलफनामे में किया गया था, जिसमें जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 8 और 9 की संवैधानिक वैधता को चुनौती दी गई थी। हलफनामे में कहा गया है, यह सवाल कि आजीवन प्रतिबंध लगाना उपयुक्त होगा या नहीं, यह पूरी तरह से संसद के अधिकार क्षेत्र में आता है। इसमें कहा गया है कि दंड के क्रियान्वयन को एक उपयुक्त समय तक सीमित कर, रोकथाम सुनिश्चित की गई है और अनावश्यक कठोर कार्रवाई से बचा गया है। केंद्र ने कहा कि यह कानून का स्थापित सिद्धांत है कि दंड या तो समय या मात्रा के अनुसार निर्धारित होते हैं। हलफनामे में कहा गया है, यह दलील दी गई है कि याचिकाकर्ता द्वारा उठाए गए मुद्दों के व्यापक प्रभाव हैं और वे स्पष्ट रूप से संसद की विधायी नीति के अंतर्गत आते हैं तथा इस संबंध में न्यायिक समीक्षा की रूपरेखा में उपयुक्त परिवर्तन करना पड़ेगा। अधिवक्ता अश्विनी कुमार उपाध्याय ने शीर्ष अदालत में याचिका दायर कर दोषी करार दिये गए राजनीतिक नेताओं पर आजीवन प्रतिबंध लगाने के अलावा देश में सांसदों और विधायकों के खिलाफ आपराधिक मामलों के त्वरित निस्तारण का अनुरोध किया है। अपने हलफनामे में, केंद्र ने रेखांकित किया कि शीर्ष अदालत ने निरंतर यह कहा है कि एक विकल्प या दूसरे पर विधायी विकल्प की प्रभावकारिता को लेकर अदालतों में सवाल नहीं उठाया जा सकता। जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 की धारा 8 (1) के तहत, अयोग्यता की अवधि दोषसिद्धि की तारीख से छह साल या कारावास के मामले में रिहाई की तारीख से छह साल तक है। हलफनामे में कहा गया है कि उक्त धाराओं के तहत घोषित की जाने वाली अयोग्यताएं संसदीय नीति का विषय हैं और आजीवन प्रतिबंध लगाना उपयुक्त नहीं होगा।

प्रधानमंत्री मोदी से मिले रेवंत रेड्डी, हैदाबाद मेट्रो के दूसरे चरण की मंजूरी का आग्रह किया

मुख्यमंत्री ने 24,269 करोड़ की मेट्रो रेल परियोजना को तत्काल मंजूरी देने का आग्रह किया। रेड्डी ने क्षेत्रीय रिंग रोड (आरआरआर) के दक्षिणी हिस्से तथा ह्यसेमीकंडक्टर मिशनको मंजूरी देने का भी प्रधानमंत्री से आग्रह किया।

एजेंसी

तेलंगाना के मुख्यमंत्री ए रेवंत रेड्डी ने बुधवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात कर हैदराबाद मेट्रो के दूसरे चरण को मंजूरी देनेका आग्रह किया और कुछ अन्य विषयों पर बात की। तेलंगाना सरकार के सूचना विभाग की ओर से जारी विज्ञप्ति के अनुसार, रेवंत रेड्डी ने प्रधानमंत्री मोदी से उनके आधिकारिक आवास पर मुलाकात की। विज्ञप्ति में कहा गया है, मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री को दूसरे चरण की रेल परियोजना के बारे में जानकारी दी, जिसके तहत हैदराबाद में 76.4 किलोमीटर का मार्ग होगा। मुख्यमंत्री ने 24,269 करोड़ की मेट्रो रेल परियोजना को तत्काल मंजूरी देने का आग्रह किया। रेड्डी ने क्षेत्रीय रिंग रोड (आरआरआर) के दक्षिणी हिस्से तथा ह्यसेमीकंडक्टर मिशनको मंजूरी देने का भी प्रधानमंत्री से आग्रह किया।

भारत-अफ्रीका रिलेशन पर बोले जयशंकर- शोषणकारी मॉडल नहीं साझेदारी पर फोकस

भारत ने अफ्रीका की कनेक्टिविटी और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण प्रतिबद्धता जताई है, जिसमें 12 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक का रियायती ऋण और रेलवे, बिजली उत्पादन, कृषि और जल आपूर्ति जैसे क्षेत्रों में पूरे महाद्वीप में 200 से अधिक पूर्ण परियोजनाएं शामिल हैं।

चीन पर जयशंकर ने कसा तंज

एजेंसी

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने बुधवार को अफ्रीका के साथ चीन के शोषणकारी मॉडल जिक्र करते हुए कहा कि इस बात पर जोर दिया कि अफ्रीका के प्रति भारत का दृष्टिकोण हमेशा दीर्घकालिक, पारस्परिक रूप से लाभप्रद साझेदारी बनाने की गहरी प्रतिबद्धता द्वारा निर्देशित रहा है। जापान-भारत-अफ्रीका बिजनेस फोरम को वर्चुअली संबोधित करते हुए विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि अफ्रीका के प्रति भारत का दृष्टिकोण हमेशा दीर्घकालिक, पारस्परिक रूप से लाभप्रद साझेदारी बनाने की गहरी प्रतिबद्धता द्वारा निर्देशित रहा है। जयशंकर ने कहा कि जुड़ाव के निष्कर्षण मॉडल के विपरीत, भारत क्षमता निर्माण, कौशल विकास और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में विश्वास करता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि अफ्रीकी देशों को न केवल निवेश से लाभ होता है बल्कि आत्मनिर्भर विकास पारिस्थितिकी तंत्र भी विकसित होता है। उन्होंने कहा कि भारत अफ्रीका का चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है, जिसका

द्विपक्षीय व्यापार लगभग 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया है और लगातार बढ़ रहा है। भारत ने अफ्रीका की कनेक्टिविटी और बुनियादी ढांचे के विकास के लिए भी महत्वपूर्ण प्रतिबद्धता जताई है, जिसमें 12 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक का रियायती ऋण और रेलवे, बिजली उत्पादन, कृषि और जल आपूर्ति जैसे क्षेत्रों में पूरे महाद्वीप में 200 से अधिक पूर्ण परियोजनाएं शामिल हैं। मंत्री ने कहा कि पेयजल योजनाओं से लेकर सिंचाई, ग्रामीण सौर विद्युतीकरण, बिजली संयंत्र, ट्रांसमिशन लाइनें, सीमेंट, चीनी और कपड़ा कारखाने, प्रौद्योगिकी पार्क, रेलवे बुनियादी ढांचे आदि जैसे विभिन्न क्षेत्रों में भारत की विकास परियोजनाओं ने स्थानीय रोजगार पैदा किया है और वास्तव में, अफ्रीका में जीवन बदल दिया है। विदेश मंत्री ने इस उद्देश्य को आगे बढ़ाने में भारत के प्रयासों का हवाला दिया।

विभिन्न पर्व

पौष पूर्णिमा	मकर संक्रांत	मौनी आमावश्या	बसंत पंचमी	माघी पूर्णिमा	महा शिवरात्री
13/01/2025	14/01/2025	29/01/2025	03/02/2025	12/02/2025	26/02/2025

संक्षेप

बिजली चोरी में कर्मचारियों की मिलीभगत

दो कर्मचारी निलंबित, मीटर रीडर बर्खास्त; एसडीओ-जेई की जांच जारी

सुलतानपुर, विद्युत विभाग के कर्मचारियों और उपभोक्ताओं के बीच मिलीभगत का बड़ा मामला सामने आया है। विभाग को राजस्व का नुकसान पहुंचाने के इस मामले में कई अहम खुलासे हुए हैं। खैराबाद मोहल्ले की उपभोक्ता रईसा बानो के मीटर में 14,784 यूनिट रीडिंग बैलेंस था। मीटर रीडर अनूप यादव ने इस मीटर को आईडीएफ कर दिया। इसी क्षेत्र के दूसरे उपभोक्ता मोहम्मद शाहिद के मीटर में 7,000 यूनिट रीडिंग बैलेंस था। टीजीटू ने 14 नवंबर को मीटर को आईडीएफ किया और 18 नवंबर को जल्दबाजी में बदल दिया। टीजीटू ने रीडिंग पोस्ट नहीं कराई। विद्युत परीक्षण खंड के अधिशासी अभियंता अवधेश कुमार की कार्रवाई में यह मामला प्रकाश में आया। जांच के बाद विद्युत वितरण खंड के टीजीटू संतोष और परीक्षण खंड के जीएमटी राजन श्रीवास्तव को निलंबित कर दिया गया है। टीडीएस बिलिंग एजेंसी के मीटर रीडर अनूप यादव को नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया है। बिलिंग एजेंसी की भूमिका भी संदिग्ध अधीक्षण अभियंता एके सिंह ने बताया कि विद्युत वितरण खंड (प्रथम) के अधिशासी अभियंता से जांच रिपोर्ट मांगी गई है। रिपोर्ट के आधार पर जेई और एसडीओ की भूमिका की जांच की जाएगी।

विवाहिता ने फांसी लगाकर दी जान

एक साल के बच्चे की मां थी, कमरे में मिला शव

बांदा, शहर कोतवाली क्षेत्र के मवई गांव में एक दर्दनाक घटना सामने आई है। यहां 24 वर्षीय विवाहिता संगीता ने अपने कमरे में फांसी लगाकर जान दे दी। मृतका एक साल के बच्चे की मां थी। संगीता ने मफलर से फंदा बनाकर आत्महत्या की। जब परिजनों को इसकी जानकारी मिली, तो उन्होंने तुरंत पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही पुलिस और फोरेंसिक टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को फांसी के फंदे से उतारा और पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मामले में पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। फोरेंसिक टीम ने भी मौके से सबूत जुटाए हैं।

भाजपा नेत्री को ब्लैकमेल कर मांगी 10 लाख की रंगदारी

आरोपी ने कोरियर से भेजे अश्लील फोटो, जान से मारने की धमकी; मुकदमा दर्ज

अमरोहा, एक भाजपा नेत्री और समाजसेविका को ब्लैकमेल कर 10 लाख रुपए की रंगदारी मांगने का मामला सामने आया है। बिजनौर के गांव झोला, थाना शिवाला कलां के रहने वाले मुकुदेव ने महिला को धमकी दी। आरोपी ने पीड़िता को कहा कि अगर वह मुकदमा वापस नहीं लेती और 10 लाख रुपए नहीं देती है, तो उसके अश्लील फोटो उसके रिश्तेदारों को भेजकर वायरल कर दिए जाएंगे।

महाकुंभ में श्रद्धालुओं पर हेलिकॉप्टर से फूल बरसाए

महाशिवरात्रि पर महादेव के जयकारों से गूंज उठा संगम, 6 प्रमुख स्नान पर 120 क्विंटल पुष्पवर्षा

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

प्रयागराज, महाशिवरात्रि पर योगी सरकार ने संगम स्नान करने पहुंचे श्रद्धालुओं के अनुभव को यादगार बनाने के लिए उन पर हेलिकॉप्टर से पुष्पवर्षा कराई। पिछले सभी प्रमुख स्नान पर्वों पर सरकार फूलों की बारिश करा चुकी है। आज 20 क्विंटल गुलाब की पंखुड़ियों से पुष्पवर्षा कराई गई। इसकी शुरूआत सुबह 8 बजे से ही हो गई, जब बड़ी संख्या में श्रद्धालु संगम के विभिन्न तटों पर स्नान कर रहे थे। आसमान से गुलाब की पंखुड़ियों की बारिश देख संगम तट पर मौजूद श्रद्धालुओं ने अभिभूत होकर जय श्री राम, हर हर महादेव, गंगा मइया और तीर्थराज के जयकारे लगाए। महाकुंभ के सभी 6 प्रमुख स्नान पर्व की बात करें तो करीब 120 क्विंटल फूल बरसाए गए। आसमान से बरसाई गई 20 क्विंटल गुलाब की पंखुड़ियां महाशिवरात्रि का स्नान पर्व दिव्य-भव्य महाकुंभ-2025 का अंतिम महत्वपूर्ण स्नान है। मंगलवार-बुधवार की रात से ही संगम तट पर लाखों श्रद्धालुओं के आने का सिलसिला शुरू हो गया।

उपनिदेशक उद्यान, प्रयागराज मंडल कृष्ण मोहन चौधरी ने बताया कि श्रद्धालुओं की भारी संख्या को देखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर पुष्पवर्षा की तैयारी पहले ही कर ली गई थी। सभी श्रद्धालुओं पर पुष्प वर्षा के लिए लगभग 20 क्विंटल गुलाब की पंखुड़ियों की व्यवस्था की गई थी। सभी घाटों पर 5 से 6 बार हुई पुष्प वर्षा पुष्प वर्षा के प्रभारी वीके सिंह ने बताया कि त्रिवेणी संगम स्थित स्नान घाटों पर 5 से 6 राउंड पुष्प वर्षा की गई।

पहले राउंड का आयोजन सुबह 8 बजे से शुरू हुआ। इसके तहत, हेलीकॉप्टर के जरिए श्रद्धालुओं पर आकाश से पुष्प वर्षा की गई।

प्रयागराज में महाशिवरात्रि पर शिव मंदिरों में जन सैलाब

गंगा में डुबकी लगाई, ब्रह्मेश्वर महादेव और मनकामेश्वर मंदिर में शिव भक्तों ने किया जलाभिषेक

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

प्रयागराज, पावन त्रिवेणी के तट पर 45 दिनों से चल रहे महाकुंभ के आखिरी स्नान पर्व महाशिवरात्रि पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ रही है। संगम और गंगा यमुना में पुण्य की डुबकी लगाने के बाद श्रद्धालु शहर के विभिन्न शिव मंदिरों में जाकर भगवान भोले शंकर का जलाभिषेक कर रहे हैं। बाहर से आए श्रद्धालुओं में खासतौर पर महाकुंभ नगर में बने पौराणिक शिव मंदिरों में भगवान शिव की आराधना और जलाभिषेक की उत्सुकता देखी गई। मेला प्रशासन की ओर से भी मंदिरों में भारी सुरक्षा व्यवस्था की गई है। शिव मंदिरों में उमड़ा शिव भक्तों का जन सैलाब भगवान विष्णु का उपासना क्षेत्र प्रयागराज शिव आराधना के महापर्व महा शिवरात्रि में शिवमय हो गया है। ब्रह्म मुहूर्त से ही शहर के सभी शिव मंदिरों में शिव भक्तों की भारी भीड़ उमड़ रही है। त्रिवेणी के तट पर चल रहे महाकुंभ का आखिरी पुण्य स्नान करके श्रद्धालु निकट के शिव मंदिरों में पहुंच रहे हैं।

सरस्वती घाट के निकट सिद्ध पीठ मनकामेश्वर में सुबह से लाखों लोग जलाभिषेक कर चुके हैं। सृष्टि के प्रथम शिव मंदिर के रूप में पुराणों में उल्लेखित दारागंज के ब्रह्मेश्वर महादेव मंदिर में भी सुबह से भक्तों का तांता लगा हुआ है। मां गंगा में पवित्र स्नान कर शिव भक्त ब्रह्मेश्वर महादेव और शिवकुटी के कोटेश्वर महादेव मंदिर में जलाभिषेक कर रहे हैं।

अरैल के विभिन्न घाटों में स्नान कर शिव भक्त निकट के सोमेश्वर महादेव मंदिर में भोले भंडारी का जलाभिषेक कर रहे हैं।

मुकुटनाथ धाम समेत सभी मंदिरों में भीड़

- महाशिवरात्रि पर उमड़ा भक्तों का सैलाब, सिविल ड्रेस में पुलिसकर्मी तैनात

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

अमेठी जिला, महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर जिले के सभी शिव मंदिरों में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ पड़ी है। भक्त कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच भगवान भोलेनाथ के दर्शन कर रहे हैं। मुसाफिरखाना के कोक्षित स्थित डंडेश्वर शिव मंदिर में श्रद्धालु लंबी कतारों में खड़े होकर दर्शन कर रहे हैं। अमेठी के मुकुटनाथ धाम, जगेशरन धाम और बहादुरपुर ब्लॉक के पीढ़ी स्थित भोलेनाथ के धाम पर भी बड़ी संख्या में भक्त पहुंच रहे हैं। देर रात तक अधिकारियों ने किया दौरा सभी मंदिरों में सुरक्षा के विशेष प्रबंध किए गए हैं। पीएसी के साथ स्थानीय पुलिस बल को तैनात किया गया है। मंदिर परिसर के आसपास सिविल ड्रेस में भी पुलिसकर्मी तैनात हैं। एएसपी हरेंद्र कुमार स्वयं विभिन्न मंदिरों का दौरा कर सुरक्षा व्यवस्था का जायजा ले रहे हैं।

रमजान आगमन से पूर्व रक्तदान का नेक काम

शियाने हैदरे करार वेलफेयर एसोसिएशन के शिविर में 12 युवाओं ने किया रक्तदान

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

सुलतानपुर, शियाने हैदरे करार वेलफेयर एसोसिएशन ने बुधवार को रहमतो वाले माह रमजान के आगमन से पूर्व रक्तदान शिविर का आयोजन किया।

डॉ. आर के मिश्रा ने शिविर का उद्घाटन किया।शिविर में कुल 12 युवाओं ने रक्तदान किया। रक्तदान करने वालों में अली रजा, एडवोकेट हाईकोर्ट ताहिर अब्बास, अली नवाज, जैनुल आबदीन, नजर अब्बास, मौलना फकी हैदर, फरमान हैदर और अली अब्बास शामिल रहे। एसोसिएशन के प्रदेश अध्यक्ष अलमदार हुसैन ने लोगों को रक्तदान के प्रति जागरूक करते हुए कहा कि रक्तदान करने से शरीर में किसी भी तरह की कमजोरी नहीं होती है। फजल रिजवी ने बताया कि तीन दिन बाद रमजान का पवित्र माह शुरू होने वाला है। जिसे मुस्लिम समुदाय में रहमतो और बरकतो का महीना कहा गया है। इस एक माह में नेक काम करने का पुण्य अन्य दिनों की अपेक्षा बढ़ जाता है। इसे मद्देनजर रखते हुए हम लोगों ने रक्तदान जैसे पुण्य कार्य को अमल में लाया है। कार्यक्रम में डॉक्टर मोहतशम रजा, युवा प्रदेश अध्यक्ष फजल रिजवी, सफदर अब्बास, इमरान, जफर हसनैन, दिलशाद हुसैन, हैदर नकवी सहित संस्था के कई सदस्य मौजूद रहे।

वॉलीबॉल प्रतियोगिता का समापन

- भाजयुमो जिलाध्यक्ष बोले- खेल हार से न डरने का संदेश देता है

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

सुलतानपुर, स्व. नसीर खान, वेद प्रकाश चैंपियन और सईद सुल्तानपुरी की स्मृति में आयोजित दो दिवसीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता का समापन हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि चंदन सिंह ने कहा कि खेल मात्र शारीरिक गतिविधि नहीं है। यह युवाओं को जीवन में हार से न डरने का संदेश देता है। फाइनल मुकाबले सुल्तानपुर स्टेडियम और सोनबरसा खेल मैदान में खेले गए। आयोजन समिति के सरवर, वदूद और जिशान की टीम ने प्रतियोगिता का सफल संचालन किया। इस दौरान अतिथियों ने खिलाड़ियों से मुलाकात की और उनका उत्साहवर्धन किया। कार्यक्रम में इन लोगों की रही मौजूदगी कार्यक्रम में एस.एन. सिंह, राम शिरोमणि वर्मा, मुनेन्द्र मिश्रा चंदन, अतुल सिंह, कुलदीप वर्मा, अमित सिंह और अमन सिंह समेत कई गणमान्य लोग मौजूद रहे। वक्ताओं ने कहा कि इस तरह के आयोजन जिले की खेल प्रतिभाओं को निखारने में अहम भूमिका निभाते हैं। समापन समारोह में विजेता और उपविजेता टीमों को पुरस्कार वितरित किए गए।

महाकुंभ स्नान से लौट रहे एलआईसी एजेंट की मौत

अमेठी में डिवाइडर से टकराई बाइक, इलाज के दौरान गई जान

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

अमेठी तहसील, प्रयागराज में महाकुंभ स्नान कर लौट रहे अमेठी के एलआईसी एजेंट बृजेश सिंह (33) की सड़क दुर्घटना में मौत हो गई। वे अपने चचेरे भाई शुभम के साथ बाइक से स्नान करने गए थे। बीते सोमवार को प्रतापगढ़ जिले के राजगढ़ क्षेत्र में वापसी के दौरान उनकी बाइक अनियंत्रित होकर डिवाइडर से टकरा गई। हादसे में बृजेश गंभीर रूप से घायल हो गए। शुभम को मामूली चोटें आईं। स्थानीय लोगों की मदद से दोनों को प्रतापगढ़ जिला अस्पताल ले जाया गया। बृजेश की गंभीर हालत को देखते हुए डॉक्टरों ने उन्हें ट्रामा सेंटर रायबरेली रेफर कर दिया। वहां इलाज के दौरान बीती रात उनकी मौत हो गई। संग्रामपुर थाना क्षेत्र के धौरहरा गांव निवासी बृजेश की शादी 8 साल पहले हुई थी। उनके परिवार में पत्नी शालू, 5 वर्षीय बेटा और माता-पिता हैं। उनके बड़े भाई मुंबई में रहते हैं। माता-पिता की देखभाल की जिम्मेदारी बृजेश के कंधों पर थी। उनकी मौत से परिवार में कोहराम मच गया है। पत्नी और बच्चे का रो-रोकर बुरा हाल है। पुलिस ने शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया है। शाम तक शव के पैतृक गांव पहुंचने की संभावना है। इसके बाद अंतिम संस्कार किया जाएगा। इस घटना से पूरे गांव में शोक छाया हुआ है।

लखनऊ-बलिया हाईवे पर निकली शिव बारात

नागा साधु, संन्यासी और डीजे संग निकले बाराती, भूत-प्रेत की वेशभूषा रखी

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

सुलतानपुर, कादीपुर स्थित लखनऊ-बलिया हाईवे पर पंचमुखेश्वर महादेव मंदिर से महाशिवरात्रि पर भव्य बारात निकाली गई। बब्लू बरनवाल नन्दी के नेतृत्व में निकली इस बारात में गाजे-बाजे, रथ, ऊंट, डीजे के साथ नागा साधु और संन्यासी भी शामिल हुए। बारात में भूत-प्रेत, पिशाच, नागदेव, मदारी और सपेरे की वेशभूषा में कलाकार शामिल थे। बाजार को रंग-बिरंगे गुब्बारों और झंडों से सजाया गया। स्वागत के लिए जगह-जगह तोरण द्वार बनाए गए। चौक पर व्यापार मंडल अध्यक्ष वीके अग्रहरि विजय ने अपने पदाधिकारियों के साथ पुष्प वर्षा कर बारात का स्वागत किया। घरों की छतों से महिलाओं ने फूलों की बरसात की और शिव भगवान की आरती उतारी। कलाकारों ने शिव तांडव, शिव-पार्वती और राधा-कृष्ण का जीवंत मंचन किया। दूर-दूर से लोग हुए शामिल व्यवसायियों ने जगह-जगह बारातियों के लिए फलाहार, जलपान और प्रसाद का वितरण किया। बारात में दूर-दूर से लोग शामिल हुए। मुड़िला रोड, बिजेथुआ रोड, शाहगंज रोड और कादीपुर रोड पर स्थानीय नेताओं और व्यापारियों ने बारात का स्वागत किया। जल-दूध से अभिषेक महाशिवरात्रि पर हजारों भक्तों ने मंदिर में दर्शन किए। भक्तों ने विधि-विधान से पूजा-अर्चना की और जल-दूध से अभिषेक किया। मंदिर में हर-हर महादेव और बोल-बम के जयकारे गूंजते रहे। व्यापार मंडल अध्यक्ष ने स्वागत में लगे व्यापारियों को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। इन लोगों की रही मौजूदगी शिव बारात की व्यवस्था में भवानीपुर प्रधान पति प्रेम प्रकाश जायसवाल, पूर्व प्रधान राधेश्याम सिंह, बब्लू बरनवाल नन्दी, कृष्णा चौरसिया, पवन सोनी, गौरव मोदनवाल सोनू, मनोज अग्रहरि निराला, अयोध्या सोनी, बालकृष्ण बरनवाल, अतुल अग्रहरि, पवन सोनी, विनोद अग्रहरि, गोविन्दा सोनी, कन्हैया मोदनवाल आदि का सहयोग सराहनीय रहा।

महाकुंभ में सफाईकर्मी ने खुद का गला काटा

गंभीर हालत में हॉस्पिटल लाया गया, बांदा का रहने वाला है

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

प्रयागराज, महाकुंभ में एक सफाई कर्मी ने चाकू से अपना गला काट लिया है। उसकी हालत गंभीर बनी हुई है। हॉस्पिटल के कउव में एडमिट कराया गया है। सफाई कर्मी की पहचान बांदा जिले के नरैनी करतल निवासी फूलचंद पुत्र अच्छेलाल के रूप में हुई है। उसने गला क्यों काटा, अभी यह स्पष्ट नहीं है। अच्छेलाल सेक्टर-21 बी में ड्यूटी पर था। इसी बीच संगम लोवर 33 नंबर घाट पर एक वॉशरूम में गया और गला रेत लिया। भाई गोरेलाल ने बताया- उसके दिमाग के हालात खराब थे। दिमाग खराब होने के कारण उसने चाकू से अपना गला काट दिया है। ड्यूटी में थे। हम लोगों को पता चला तब हम लोग आए। उसकी चार बेटी और एक बेटा है। वह जनवरी से ही महाकुंभ में सफाई का काम कर रहा था।

मंदिर जा रहे बुजुर्ग पर हमला

बांदा में दबंगों ने लाठी-डंडों से पीटा, घायल को जिला अस्पताल में भर्ती कराया

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

बांदा, तिंदवारी थाना क्षेत्र के गुथनी गांव में एक बुजुर्ग पर दबंगों ने हमला कर दिया। भूरेलाल नाम के बुजुर्ग महाशिवरात्रि के अवसर पर मंदिर में पूजा करने जा रहे थे। इसी दौरान रास्ते में गांव के 4 दबंगों ने उन पर हमला कर दिया। पीड़ित के अनुसार, आरोपियों ने फरसा, लाठी और डंडों से उन पर हमला किया। राहगीरों ने घटना की सूचना तुरंत परिजनों को दी। परिजनों ने पुलिस को सूचित किया। मौके पर पहुंची पुलिस ने घायल बुजुर्ग को पहले तिंदवारी सीएचसी में भर्ती कराया।

पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर फरवरी में तीन बड़े हादसे

8 की मौत, बिहार-एमपी के यात्री शामिल, स्पीड के साथ अंधेरा बन रहा हादसों का कारण

भारत संवाद न्यूज नेटवर्क

सुलतानपुर, पूर्वांचल एक्सप्रेस-वे पर फरवरी माह में तीन बड़े सड़क हादसे हुए। इन हादसों में बिहार के पांच और मध्य प्रदेश के दो यात्रियों सहित कुल आठ लोगों की जान चली गई। सभी दुर्घटनाएं रात के समय हुईं। पहला हादसा एक फरवरी को बल्दीराय थाना क्षेत्र में हुआ। देहली बाजार के पास किमी 101 पर एक बोलेरो की दूसरे वाहन से टक्कर हो गई। इस हादसे में बिहार के जगदीशपुर निवासी दशरथ सिंह और लल्लन सिंह की मौत हो गई। इसी क्षेत्र के धरम पिपरा के संजय सिंह और सोनू घायल हो गए। दूसरा हादसा आठ फरवरी को गोसाईगंज थाना क्षेत्र में हुआ। किमी 128 के पास गौरा में एक डीसीएम अनियंत्रित होकर कंटेनर से टकरा गई। इस हादसे में मध्यप्रदेश के उज्जैन निवासी बने सिंह और साजापुर के तेजूलाल की मौके पर ही मौत हो गई।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, अरविन्द कुमार शर्मा द्वारा एफ.एल.टी.-एल.जी.-75, आर.एम. 4/4, इंदिरा नगर, सुंदर बाग, आर.डी. कुर्ला (प.) मुम्बई,400070 महाराष्ट्र से प्रकाशित एवं एस.आर. पब्लीकेशन, मोहन अर्जून कम्पाउंड गोदाम नं. 8,9,10 नीयर घाटन पाड़ा, वैशाली नगर, लास्ट बस स्टाप, दहिसर (पूर्व), मुम्बई 400068 महाराष्ट्र से मुद्रित।। सम्पादक- खुशीराम शर्मा ।।

EMail-bsmumbai2017@gmail.com किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र मुम्बई न्यायालय ही होगा। 02248253669,8097049935,9935750291RNI No-MAHHIN2017/74173 संपर्क का कार्यालय- 66/68 भाखरिया बिल्डिंग मीना मेहता मार्ग मोदी स्ट्रीट मुम्बई 400001 भारत संवाद सिटी ऑफिस- फ्लैट नंबर 24, सेकंड फ्लोर, कांटेक्टर बिल्डिंग, ब्लार्ड स्टेट, वजू कोटक मार्ग, शहीद भगत सिंह रोड, फोर्ट, मुंबई 400001 महाराष्ट्र।